Jaina Offset Printers: 9873149889, 9811269844

सत्यमेव जयते

ई०एस०आई०सी०-2.0
चिन्ता से मुक्ति

अंक-24

सुविधा

हिन्दी पत्रिका

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार
क्षेत्रीय कार्यालय कानपुर

सत्यमेव जयते

ई०एस०आई०सी०-2.0
चिन्ता से मुक्ति

सुविधा
हिन्दी पत्रिका

वर्ष 2022-23 | अंक 24 | केवल विभागीय परिचालन हेतु

संरक्षक
श्री आर० के० कैम
अपर आयुक्त

संपादक
श्री एच०एन० चौधरी
सहायक निदेशक (रा०भा०)

कार्यकारी संपादक एवं टंकण
श्रीमती श्रद्धा वर्मा
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

मुद्रण सहयोग
श्री मोहित विश्वकर्मा, अधीक्षक
श्रीमती रेनू सिंह, सहायक

प्रकाशक:
क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, सर्वोदय नगर
कानपुर - 208005

(प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण के लिए संबंधित लेखक जिम्मेदार हैं। संपादक मंडल का इस संबंध में कोई उत्तरदायित्व नहीं है।)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

मुखमीत सिंह भाटिया
महानिदेशक

सं. ए-49/17/1/2016-रा.भा.
दिनांक : 29.6.2022

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर अपनी गृह पत्रिका "सुविधा" का 24वां अंक शीघ्र प्रकाशित करने जा रहा है| निगम में "क" क्षेत्र की हिंदी पत्रिकाओं में "सुविधा" का अपना विशिष्ट स्थान है| पत्रिका के माध्यम से अधिकतम कार्मिक अपने कार्यालय का कामकाज हिंदी में करने की दिशा में प्रेरित होंगे, ऐसी मुझे उम्मीद है| पत्रिका का यह अंक पूर्व के अंकों से और अधिक रोचक, सूचनाप्रद और ज्ञानवर्धक हो, ऐसी मेरी कामना है|

शुभकामनाओं सहित ।

मु. भाटिया
29/6/22
(मुखमीत सिंह भाटिया)

श्री आर.के. कैम
अपर आयुक्त,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)
क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

मनोज कुमार शर्मा
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

अ.शा.पत्र.सं. ए- 49/17/3/2016 -रा.भा.
दिनांक: 08/04/2022

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर द्वारा गृह पत्रिका **'सुविधा'** के 24वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के 23 अंकों का सफल प्रकाशन कानपुर क्षेत्र के लिए गौरव का विषय है।

पत्रिका से जुड़े सभी राजभाषा कार्मिकों एवं रचनाकारों का प्रयास प्रशंसनीय है। कामना है कि सदैव की तरह पत्रिका का यह अंक अपने लक्ष्य में सफल रहे।

शुभकामनाओं सहित ।

आपका

(मनोज कुमार शर्मा)

श्री आर.के. कैम
अपर आयुक्त,
क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
कानपुर।

संरक्षक की कलम से

क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर की विभागीय गृह पत्रिका 'सुविधा' का 24वां अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। चूंकि हमारे संगठन का कार्य बीमाकृत व्यक्तियों से संबंधित है, जो समाज के मध्यम या निम्न मध्यम वर्ग से आते हैं। ऐसे में अपनी बात उन तक पहुंचाने के लिए भाषा बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। उनसे सीधा संवाद हम उनकी भाषा में ही स्थापित कर सकते हैं। चूंकि हिन्दी राजभाषा होने के साथ–साथ जन प्रचलित भाषा भी है। इसलिए निगम के कार्यालयों में हिन्दी में काम करना संवैधानिक अनिवार्यता के साथ–साथ जरूरत भी है।

हिन्दी का प्रयोग हम सही अर्थ में तभी बढ़ा सकते हैं, जब हमें हिन्दी से प्रेम हो और हम अपने कार्यालयीन कार्य में हिन्दी के प्रयोग में गर्व की अनुभूति करें। यदि हम सच्ची निष्ठा और प्रेम से हिन्दी में कार्य करेंगे, तो आंकडे स्वयं ही अच्छे होंगे। हिन्दी आज सिर्फ देश की राजभाषा ही नहीं रह गयी है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इसका व्यापक प्रचार–प्रसार हो रहा है। सरकार के शीर्ष पदों पर आसीन व्यक्ति भी आज देश–विदेश में आयोजित अधिकांश सम्मेलनों में हिन्दी में ही भाषण देते हैं। इस संदर्भ में हिन्दी का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है।

किसी भी कार्यालय में गृह पत्रिका प्रकाशित करने का उद्देश्य राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करना तो होता ही है, साथ ही पत्रिका का उद्देश्य कार्यालय के कार्मिकों की रचनात्मकता और सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना भी होता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पत्रिका का प्रकाशन किया गया है। आशा है कि 'सुविधा' पत्रिका का यह अंक भी पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा। पाठकों की प्रतिक्रियाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

(आर0के0कैम)
अपर आयुक्त

संपादकीय

क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर की विभागीय गृह पत्रिका 'सुविधा' के 24वें अंक के संपादक के रूप में आपसे रूबरू होते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

जैसा कि गूगल के एक वरिष्ठ अधिकारी द्वारा कहा गया है कि आने वाले कुछ वर्षों में भारत दुनिया के बड़े कंप्यूटर बाजारों में से एक होगा तथा इण्टरनेट पर जिन भाषाओं का दबदबा होगा, वे हैं– **हिन्दी मेन्डरिन और अंग्रेजी**।

हिन्दी के भविष्य की इस उजली तस्वीर के बीच हमें हिन्दी को प्रौद्योगिकी के अनुरूप ढालना है। आज जरूरत है कि तकनीकी, विज्ञान व वाणिज्य आदि विषयों संबंधी वेबसाइट हिन्दी में तैयार करने की। इन सबके बीच अपनी भाषा की प्रकृति को बरकरार रखते हुए इसमें लचीलापन लाना होगा। शुरूआत में हिन्दी को सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों व विकास के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। परन्तु भाषा के मानकीकरण व यूनिकोड के प्रादुर्भाव ने सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में हिन्दी को न सिर्फ एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में स्थापित किया बल्कि हिन्दी भाषा के विकास हेतु नई राहें खोल दी हैं। आज सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हिन्दी का महत्व पहले से कहीं अधिक हो गया है और यह महज राजभाषा की संवैधानिक बाध्यता से निकलकर व्यावसायिक भाषा के रूप में उभर कर सामने आयी है।

ऐसे में हमारा भी यह दायित्व है कि हम सब अपना संपूर्ण कार्यालयी कार्य हिन्दी में करें। इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए प्रेरित करने हेतु मैं श्री आर0 के0 कैम, अपर आयुक्त महोदय का आभारी हूं कि उनके जुझारू नेतृत्व एवं सटीक मार्गदर्शन से पत्रिका प्रकाशन का यह कार्य सफल हुआ। जिन कार्मिकों ने अपने व्यस्त कार्य–कलाप से समय निकालकर पत्रिका के इस अंक के लिए अपनी रचनाएं दी हैं, मैं उनका भी आभार व्यक्त करता हूं।

इस अंक में हमने आपकी अभिरूचि के अनेक आलेख, कविताएं, कहानियां और अन्य सामग्री प्रकाशित की है। आशा है, पिछले अंकों की तरह यह अंक भी आपको अच्छा लगेगा। आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

(एच0 एन0 चौधरी)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

लेख	पृष्ठ संख्या
► प्लास्टिकः हानियां एवं समाधान	1
► मैं खुद बदलूंगा–दुनिया तभी बदलेगी	4
► ऑनलाइन शिक्षा के लाभ एवं हानि	5
► मैं कविता हूं	7
► भाभी मां	8
► कविता–निर्मला पुतुल	10
► दायित्व	11
► गजल	13
► झंकृत वेदनाएं	14
► सीधी है भाषा बसंत की	15
► गंगा–जमुनी तहजीब के शायर व कविः बेकल उत्साही	18
► समुद्र और सॉनेट	21
► प्रशासनिक भाषा को सहज व सरल बनाने के सुझाव	24
► एक झलक – क्षेत्रीय कार्यालय की गतिविधियों की	26
► कोरोना संकट और मानव जीवन पर उसका प्रभाव	29
► पूर्व का वेनिस अलेप्पी	32
► कानपुर के प्रमुख दर्शनीय स्थल	35
► टैक्स बचाने वाली प्रमुख योजनाएं	37
► राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में विजेताओं को वितरित नकद पुरस्कार का विवरण	39
► आपकी पाती	40
► समाचार पत्र की सुर्खियों से	43

पत्रिका के मुखपृष्ठ पर केंद्र में स्थित चित्र कानपुर के माहेश्वरी मोहाल में स्थित **कांच के मंदिर** का है। आवरण पृष्ठ पर बायीं ओर ऊपर स्थित चित्र कानपुर के बिठूर में स्थित **नाना राव स्मारक पार्क** का है। आवरण पृष्ठ पर बायीं ओर बीच में स्थित चित्र कानपुर शहर के बेना झावर में स्थित **मोती झील** का है। आवरण पृष्ठ पर बायीं ओर सबसे नीचे स्थित चित्र कानपुर में गंगा बैराज के निकट स्थित **अटल घाट** का है।

प्लास्टिकः हानियां एवं समाधान

(हिन्दी निबंध प्रतियोगिता वर्ष 2019 में प्रथम पुरस्कृत निबंध)

सुश्री रूपाली बाजपेयी
प्रवर श्रेणी लिपिक

संदर्भ –

प्लास्टिक शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द प्लास्टिकोस' से हुई थी, जिसका हिन्दी अर्थ है–'आसानी से नम्य होने वाला पदार्थ'। अर्थात् प्लास्टिक एक ऐसा पदार्थ है जिसे किसी भी आकार एवं रूप में ढाला जा सकता है। प्लास्टिक शब्द से शायद ही कोई व्यक्ति हो जो वर्तमान में परिचित न हो, चूंकि यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। यह सन 1970 के दशक से प्रचलन में आया। यह प्लास्टिक आज शिशु के खिलौने, टूथब्रश, टिफिन, बोतल, बैग इत्यादि हमारी दैनिक क्रिया–कलापों में सम्मिलित हैं। यहां तक कि मानव का कृत्रिम हृदय भी आजकल प्लास्टिक के ही तैयार किए जाते हैं, परन्तु यही प्लास्टिक एक बार प्रयोग के पश्चात हमारे जीवन को किस प्रकार हानि पहुंचाता है। यह हमें आगे की चर्चा से ज्ञात होगा।

प्लास्टिक की उपयोगिता के कारण–

1. प्लास्टिक को इस कारण से अत्यंत प्रयोग में लाया जा रहा है क्योंकि इसे किसी भी आकार रंग रूप में आसानी से ढाला जा सकता है तथा अपनी आवश्यकतानुसार वस्तुओं का निर्माण किया जा सकता है।

2. प्लास्टिक की उपयोगिता का एक कारण यह भी है कि यह अन्य धातुओं से सस्ता होता है। अतः धातु के स्थान पर प्लास्टिक से बने बर्तन, स्टेशनरी का सामान इत्यादि की मांग बहुतायत में रहती है।

3. चूंकि प्लास्टिक अपने वजन से 200 गुना तक वजन उठा सकता है, अतः प्लास्टिक से बने थैले बाजार आदि से सामान लाने में उपयोगी होते हैं।

4. प्लास्टिक का पुनर्चक्रण करने के पश्चात दोबारा अन्य वस्तुओं का निर्माण किया जा सकता है। PETE तथा UDPE जैसे प्लास्टिक के उदाहरण हैं जिसका पुनर्चक्रण किया जाता है।

प्लास्टिक से होने वाली हानियां – प्लास्टिक ने भले ही मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है परन्तु यही प्लास्टिक जब उपयोग किया जा चुका होता है तो पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुंचता है। भारत में प्रतिवर्ष 700 मिलियन टन प्लास्टिक अपशिष्ट निकलता है जो कि विश्व का 10 प्रतिशत है। हमारे देश में प्लास्टिक बाजार की आय लगभग 25000 करोड़ रूपए है। अधिकांशतः 70 प्रतिशत प्लास्टिक अपशिष्ट महासागरों में यत्र–तत्र बिखरा हुआ है। प्लास्टिक प्रायः 500 से हजारों वर्षों में अपघटित होता है। अतः यह नान–बायोडिग्रडेबल पदार्थ है।

1. मृदा प्रदूषण का कारक

- प्लास्टिक चूंकि अपघटित होने वाला पदार्थ नहीं है, अतः लोग सामान्यतः जमीन में प्लास्टिक को गाड़ देते हैं। जिससे मृदा में जहरीले रसायन मिलने लगते हैं। इस मृदा में जो फसल भी उगती

है, वह भी तमाम बीमारियों का कारण होती है।

- आंकड़ों के अनुसार, देश की 21 प्रतिशत बीमारियों का कारण प्लास्टिक का उपयोग किया जाना है।

2. समुद्री जीवों पर प्रभाव

- प्लास्टिक की थैलियां एवं अपशिष्ट पदार्थ समुद्री जीवों की श्वासनली व यकृत में अवरोध पैदा करने के कारण समुद्री जीवों की मृत्यु तक हो जाती है।
- पिछले कुछ वर्षों में समुद्री व्हेल मछली के मरने की खबर देखने को मिली थी, जिसका बाद में परीक्षण करने पर मृत्यु का कारण उसके पेट में बहुतायत में प्लास्टिक अपशिष्ट का जमा होना बताया गया था।
- यही प्लास्टिक समुद्री जल में हजारों वर्षो तक पड़ा रहने के कारण समुद्री जल में जहरीले पदार्थ घोलता है। चूंकि प्लास्टिक में कार्बन, नाइट्रोजन, क्लोरीन, बेन्जीन इत्यादि के यौगिक उपलब्ध होते हैं, जो कि जल को विषैला करने में योगदान देते हैं।

3. मानव जीवन पर प्रभाव

मानव जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला यही प्लास्टिक कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों का कारक सिद्ध हुआ है। प्लास्टिक के बनने में प्रयोग होने वाला फार्मेल्डिहाइड रसायन त्वचा के संपर्क में आने पर छाले, फफोले आदि उत्पन्न करता है। पॉलिस्टरीन नामक प्लास्टिक में प्रयुक्त फॉस्जीन ($Cocl_2$) गैस विषैली एवं दम घोटने वाली गैस है, जिसके सूंघने से मानव की मृत्यु तक हो जाती है।

4. वायु प्रदूषण का कारक

- प्लास्टिक के अपघटित न होने के कारण इसके अपशिष्ट का निपटान करने के लिए प्रायः इसे जला दिया जाता है, जिससे निकलने वाली हानिकारक गैसें जैसे– कार्बनडाइआक्साइड, क्लोरो फ्लोरो कार्बन इत्यादि से वायुमंडल की ओजोन परत को क्षति पहुंचती है। यही ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों से हमारी रक्षा करती है।

5. जल प्रदूषण का कारक

- प्रायः एक बार प्रयोग होने वाला प्लास्टिक जैसे – प्लास्टिक कैरी बैग, थैलियां, खिलौनों के टुकड़ें इत्यादि यत्र तत्र फेंक दिए जाते हैं। वर्षा के जल के साथ यही अपशिष्ट बहकर नदी, नालियों से होकर सागरों तक पहुंच जाते हैं।
- यही अपशिष्ट नालियों में फंसने के कारण अक्सर निकास मार्ग में अवरोध पैदा करते हैं। मुम्बई में आई बाढ़ का कारण नालियों का प्रवाह मार्ग अवरूद्ध होना ही था।
- महासागरों के जल अथवा नदियों, तालाबों के जल में यह थैलियां एवं प्लास्टिक अपशिष्ट विषाक्त रसायन छोड़ते हैं जो कि जल प्रदूषण का कारण है।

अतः प्लास्टिक के उपलब्ध होने के कारण यह पर्यावरण के हर पहलू को हानि पहुंचाता है।

"प्लास्टिक है पृथ्वी के भक्षक,

आओं करें इसकी रक्षा

और बनें पृथ्वी के रक्षक

प्लास्टिक का करें बहिष्कार, जन कल्याण की है यही पुकार।"

प्लास्टिक का निर्माण एवं संघटन

- प्लास्टिक का निर्माण पेट्रोलियम पदार्थों से प्राप्त रेजिन एवं बेन्जीन तथा वाइनिल क्लोराइड का बहुलीकरण करके किया जाता है। अतः इसमें कई प्रकार के जटिल यौगिक एवं कार्बोहाइड्रोजन यौगिक मिले होते हैं।
- प्लास्टिक का पुनर्चक्रण भी किया जाता है। पुनर्चक्रण की प्रक्रिया सभी प्रकार के प्लास्टिकों में नहीं की जा सकती है तथा पुनर्चक्रण प्रक्रिया महंगी भी होती है।

प्लास्टिक से होने वाली हानियों का समाधान

प्लास्टिक से होने वाली हानियों से बचा जा सकता है, यदि हम सभी मिलकर उसके प्रयोग को नियंत्रित करने का प्रयास करें। –

1. घर से बाहर कुछ भी सामान लेने जाएं तो साथ में कपड़े का थैला लेकर जाएं तथा एक ही प्रकार की प्लास्टिक की थैलियों को भी एक से अधिक बार प्रयोग करने का प्रयास करें।
2. भोजन परोसने एवं खाने के लिए धातु एवं चीनी मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग करें।
3. प्लास्टिक के प्रयोग को नियंत्रित करने के लिए जागरूकता अभियान एवं रैली का आयोजन करें, तथा अपने आस–पास के लोगों को भी प्लास्टिक के प्रयोग को कम करने के लिए प्रेरित करें।

सराहनीय कदम

" से नो टू सिंगल यूज प्लास्टिक"

रेत पर कलाकृति करने वाले जाने माने कलाकार "सुदर्शन पटनायक" ने इस गणेश चतुर्थी के उपलक्ष्य में रेत पर गणेश जी की मूर्ति बनाकर उनके आस–पास 1000 प्लास्टिक की बोतलें सजाकर जन साधारण को एक विशेष संदेश दिया है, जिससे प्रभावित होकर प्रधानमंत्री जी ने 'सिगल यूज प्लास्टिक' का बहिष्कार करने का मंत्र देशवासियों को देते हुए स्लोगन दिया है–

'से नो टू सिंगल यूज प्लास्टिक'

(एक बार ही प्रयोग आने वाली प्लास्टिक को न कहें)

अतः यह हमारा कर्तव्य है कि सभी जन साधारण एवं प्रत्येक व्यक्ति मिलकर इस उद्देश्य को पूर्ण करने में अपना योगदान दें।

आगे की राह एवं सरकार द्वारा उठाए गए कदम

- दिल्ली सरकार द्वारा प्लास्टिक विनिर्माण एवं प्रयोग निषेध अधिनियम 2001 लागू किया था, जिसके अनुसार 03 माह से एक वर्ष तक कारावास तथा 2500 रूपए जुर्माना अथवा दोनों का प्रावधान नियम का उल्लंघन करने वाले के विरूद्ध किया गया था।

- नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल तथा सरकार द्वारा भी 50 माइक्रोन से कम चौड़ाई की प्लास्टिक के उत्पादन एवं बिक्री पर रोक लगा दी गयी है। अतः यह दंडनीय अपराध है।

निष्कर्ष

चूंकि प्लास्टिक पर्यावरण के लिए अत्यधिक हानिकारक है, परन्तु हम इसकी उपयोगिता को अनदेखा नहीं कर सकते । प्लास्टिक हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। अतः हमें प्रयास करना चाहिए कि प्लास्टिक का उपयोग जहां तक हो सके, नियंत्रित करें तथा अपने पर्यावरण की रक्षा करें।

मैं खुद बदलूंगा, दुनिया तभी बदलेगी

नरेश कुमार
फार्मासिस्ट

एक दिन सारे कर्मचारी जब ऑफिस पहुंचे, तो उन्हें गेट पर एक बड़ा सा नोटिस लगा दिखा—

"इस ऑफिस में अभी तक जो व्यक्ति आपको आगे बढ़ने से रोक रहा था, कल उसकी मृत्यु हो गयी। हम आपको उसे आखिरी बार देखने का मौका दे रहे हैं। कृपया बारी—बारी से मीटिंग हॉल में जाएं और उसे देखने का कष्ट करें।"

जो भी नोटिस पढ़ता, उसे पहले तो दुःख होता, लेकिन फिर जिज्ञासा होती कि आखिर वह कौन था, जिसने उसकी प्रगति रोक रखी थी? फिर वह हॉल की तरफ चल देता। देखते—देखते हॉल के बाहर काफी भीड़ इकट्ठी हो गयी। गार्ड ने सभी को रोक रखा था और उन्हें एक—एक करके अंदर जाने दे रहा था। सबने देखा कि अंदर जाने वाला व्यक्ति काफी गंभीर होकर बाहर निकलता, मानों उसके किसी करीबी की मृत्यु हुई हो।

इस बार अंदर जाने की बारी एक पुराने कर्मचारी की थी, उसे सब जानते थे। सबको पता था कि उसे हर एक चीज से शिकायत रहती है। ऑफिस से, सहकर्मियों से, वेतन से, तरक्की से, हर एक चीज से, पर आज वह थोड़ा खुश लग रहा था। उसे लगा कि जिसकी वजह से उसके जीवन में इतनी समस्या थी, वह गुजर गया। अपनी बारी आते ही वह तेजी से ताबूत के पास पहुंचा और बड़ी जिज्ञासा से उचक कर अंदर झांकने लगा। पर यह क्या.....................अंदर तो एक बड़ा सा आईना रखा हुआ था।

यह देखकर वह कर्मचारी क्रोधित हो गया और जोर से चिल्लाने को हुआ, तभी उसे आइने के बगल में एक संदेश लिखा दिखा – "इस दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति है, जो आपकी प्रगति.........................आपकी उन्नति..........................आपकी तरक्की रोक सकता है......................और वह आप खुद हैं।"

इस पूरे संसार में आप वह अकेले व्यक्ति हैं, जो आपकी जिन्दगी में क्रान्ति ला सकते हैं।

अर्थात् मैं खुद बदलूंगा। दुनिया तभी बदलेगी।

> हिन्दी राष्ट्रीय एकता की कड़ी है।
> — डा0 जाकिर हुसैन

आनलाइन शिक्षा के लाभ एवं हानि

(हिन्दी निबंध प्रतियोगिता वर्ष 2020 में प्रथम पुरस्कृत निबंध)

प्रांजुल त्रिपाठी
प्र०श्रे०लि०

संदर्भ – पिछले दशक में आमूलचूल परिवर्तन के तौर पर शिक्षा प्रणाली ब्लैकबोर्ड एवं चाक से निकलकर कंप्यूटर की स्क्रीन, माउस, प्वाइंटर इत्यादि के इर्द–गिर्द पहुंचती हुई नजर आ रही है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा प्रणाली के उत्थान में भारत सदैव प्रतिनिधित्व करता रहा है, चाहे वह गुरूकुलों की स्थापना हो या नालंदा विश्वविद्यालय के रूप में दुनिया की पहली यूनिवर्सिटी स्थापित करने का विषय हो। विज्ञान के विकास के साथ–साथ मानव जीवन में एवं दैनिक क्रिया–कलापो में परिवर्तन स्वाभाविक है। आनलाइन शिक्षा प्रणाली भी वैश्विक व्यवस्था में सुगमता लाने के लिए जन सामान्य द्वारा स्वीकार की गई प्रणाली है।

आनलाइन शिक्षा क्या है?

आनलाइन शिक्षा प्रणाली में पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया ने कापी–किताब से बाहर निकलकर डिजिटल रूप लिया है। आनलाइन शिक्षा प्रणाली में इण्टरनेट के प्रयोग से अध्यापक छात्रों को घर बैठे सुगमता के साथ पढ़ाते हैं। आनलाइन शिक्षा **'वर्चुअल क्लासरूम', 'वीडियों कान्फ्रेसिंग', जूम एप्लीकेशन, 'फेसबुक लाइव', यू ट्यूब** इत्यादि माध्यमों से सम्पन्न करायी जाती है। छात्र घर बैठे अपने मोबाइल कंप्यूटर पर इण्टरनेट कनेक्टिविटी के द्वारा अध्यापक से सीधे जुड़कर पढ़ाई करते हैं। हाल ही में 'जूम एप्लीकेशन' के प्रचलित होने के बाद से 50–100 छात्र एक साथ आनलाइन क्लासरूम में जुड़कर सीधे अध्यापक के संपर्क में रहते हैं।

आनलाइन शिक्षा के प्रकारः

आनलाइन शिक्षा को मुख्यतः दो भागों में बांटा गया है –

सिंक्रोनस आनलाइन शिक्षाः सिंक्रोनस आनलाइन शिक्षा का अर्थ है 'एक ही समय पर'। सिंक्रोनस शिक्षा प्रणाली में अध्यापक एवं छात्र पूर्व निर्धारित समय पर एकत्र होते हैं एवं ठीक उसी समय पर अध्यापक की बातों/गतिविधियों को देख/समझ रहे होते हैं, जब अध्यापक उन्हें समझाता है। सिंक्रोनस शिक्षा प्रणाली **'वर्चुअल क्लासरूम', 'वीडियों कान्फ्रेसिंग', 'जूम एप'** इत्यादि के माध्यम से संपन्न होती है। सिंक्रोनस शिक्षा प्रणाली में छात्रों के पास सीधे अपने शिक्षक से संवाद करने की सुविधा होती है। वर्तमान समय में सिंक्रोनस शिक्षा प्रणाली अत्यधिक प्रचलन में है।

असिंक्रोनस आनलाइन शिक्षाः असिंक्रोनस आनलाइन शिक्षा में अध्ययन सामग्री **ई–बुक, वीडियो लेक्चर** इत्यादि रूप में विभिन्न आनलाइन पोर्टल में संरक्षित रहती है। छात्र अपनी सुविधानुसार समय निकालकर उस प्रणाली में अध्ययन कर सकते हैं।

असिंक्रोनस शिक्षा प्रणाली में प्रायः छात्रों की अधिक रूचि होती है क्योंकि इसमें छात्र एक ही चीज को बार–बार पढ़ सकते हैं। असिंक्रोनस आनलाइन शिक्षा मुख्यतः **'ई बुक पोर्टल', 'यूट्यबू वीडियो'** इत्यादि माध्यमों से संपन्न होती है। इस शिक्षा प्रणाली में छात्र अध्यापकों या सहपाठियों से सीधे संवाद स्थापित नहीं कर सकता है।

भारत में आनलाइन शिक्षाः

भारत में आनलाइन शिक्षा प्रणाली अभी शैशवावस्था में है। अभी व्यापक रूप से इसका प्रचार– प्रसार एवं उपयोग बाकी है। तार्किक कथन है कि 'आवश्यकता अविष्कार की जननी है।' देश–दुनिया में कोविड–19 (कोरोना वायरस) संक्रमण के कारण जनमानस में डर की व्याप्ति हुई जिसके फलस्वरूप स्कूल–कॉलेज इत्यादि विगत कई माह से संचालित नहीं हुए हैं। वर्तमान समय के संकट एवं भविष्य के बचाव को दृष्टिगत रखते हुए सरकार द्वारा आनलाइन शिक्षा व्यवस्था (ई–लर्निंग) पर जोर दिया जा रहा है। शहरी क्षेत्रों के स्कूल/कालेज धीरे–धीरे आनलाइन पढ़ाई पर जोर दे रहे हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति अभी भी ठीक नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी स्कूलों में 'सूचना एवं संचार तकनीक उपकरण एवं इण्टरनेट कंनेक्टीविटी के अभाव को दूर करने हेतु अभी बहुत से प्रयास वाछित हैं।

आनलाइन शिक्षा के लाभः

1. **तकनीक की समझ का विकासः** आनलाइन शिक्षा प्रणाली में कंप्यूटर/मोबाइल के द्वारा इण्टरनेट कनेक्टिविटी के भरपूर प्रयोग के अवसर छात्रों को प्राप्त होते हैं, जिससे छात्रों में विज्ञान एवं तकनीक की समझ का विकास होता है।
2. **समय की बचतः** आनलाइन शिक्षा प्रणाली में छात्रों एवं शिक्षकों के समय की बचत होती है, क्योंकि मोबाइल या कंप्यूटर में एक क्लिक के द्वारा छात्र जुड़ सकते हैं एवं कक्षा प्रारंभ हो जाती है।
3. **भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव न होनाः** आनलाइन शिक्षा व्यवस्था में छात्रों की पढ़ाई पर मौसम का असर नहीं होता, छात्र किसी भी मौसम में सुविधानुसार घर पर बैठकर पढ़ सकते हैं। जबकि स्कूल आने जाने में खराब मौसम का अधिक प्रभाव रहता है।
4. **खर्च में कमीः** आनलाइन शिक्षा व्यवस्था में छात्रों को उपकरण खरीदने में सिर्फ एक बार खर्च करना पडता है जिससे कई वर्षों तक पढ़ाई की जा सकती है। स्कूल आने–जाने के परिवहन खर्च से भी छात्रों को मुक्ति मिल जाती है। परंपरागत शिक्षा के मुकाबले आनलाइन शिक्षा कम खर्चीली है।
5. **अभिभावको की देख–रेखः** प्रायः अभिभावकों में बच्चो के स्कूल के माहौल एवं बच्चो की सुरक्षा को लेकर चिन्ता व्याप्त रहती है। आनलाइन शिक्षा प्रणाली में बच्चे अभिभावकों की देख–रेख में घर पर पढ़ते हैं, जिससे अभिभावकों में संतुष्टि का भाव रहता है।
6. **दूरी की बाध्यता नहीं:** आनलाइन शिक्षा में छात्र घर बैठे देश–विदेश के शिक्षकों के मार्गदर्शन में पढते हैं। आनलाइन शिक्षा ने हजारों किमी0 की दूरी को संचार के माध्यमों के प्रयोग द्वारा अदना कर दिया है।

ऑनलाइन शिक्षा की हानि

1. **अनुशासन में कमीः** जीवन के मूल्यों के समुचित विकास हेतु अनुशासन का अत्यधिक महत्व है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली में छात्रों को अध्यापकों का डर नहीं रहता। छात्र प्रायः ही ऑनलाइन कक्षाओं को बीच में छोड़ देते हैं या खेलने लग जाते हैं। अतः बच्चों को अनुशासित रखने के लिए ऑफलाइन शिक्षा प्रणाली ही उपयुक्त है।
2. **प्रतिस्पर्धा की भावना की कमीः** ऑनलाइन शिक्षा में छात्र अपने–अपने घर पर होते हैं, सामने न होने के कारण वह एक दूसरे से जल्दी प्रश्नों को हल करने की कोशिश नहीं करते जिससे प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित नहीं हो पाती।
3. **अकेलापन एवं मनोरोगः** छात्रों को सामान्यतः स्कूलों में भरी कक्षा में पढ़ाई करने की आदत होती

है। ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में लगातार घर के बंद कमरे में दिन भर पढ़ाई करने में बच्चों को अकेलापन महसूस होता है एवं अमेरिकन रिसर्च के अनुसार ऐसे बच्चों में 'मनोरोगी' होने की संभावना अधिक रहती है।

4. **शारीरिक विकास न होना:** प्रायः स्कूलों में खेलने की रूचि छात्रों में अत्यधिक रहती है, बाहरी खेल खेलने से छात्रों का शारीरिक विकास होता है। ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में छात्र घर पर ही होते हैं और अन्य छात्रों के साथ बाहरी खेल नहीं खेल पाते हैं जिससे उनका शारीरिक विकास बाधित होता है।

निष्कर्ष: उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यदि ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को मूलभूत सुधारों के साथ व्यापक स्तर पर लागू किया जाए किन्तु आवश्यक स्थितियों हेतु (जैसे – बालविकास, प्रतिस्पर्धावर्धन इत्यादि हेतु) परंपरागत शिक्षा प्रणाली को लागू किया जाए तो समावेशित तौर पर 'ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली' राष्ट्र के भविष्य को सुदृढ़ करने का माध्यम बन सकती है।

सुझाव: यदि ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली कक्षा 11 से लेकर बाद की पूरी पढ़ाई मे लागू किया जाए एवं कक्षा नर्सरी से कक्षा 10 तक परंपरागत शिक्षा पर जोर दिया जाए तो ऑनलाइन शिक्षा के नुकसानों (प्रतिस्पर्धा, अनुशासन, शारीरिक विकास) को दूर करते हुए इसे अपनाया जा सकता है क्योंकि प्रायः कक्षा 10 तक छात्रों में ज्यादातर चीजें विकसित हो जाती हैं।

मैं कविता हूँ

सुश्री शेफाली दुबे
फार्मासिस्ट

मैं कविता हूँ,
विचारों की घाटी में बहने वाले शब्दों की सरिता हूँ,
हैं मेरे रूप अनेक, हैं अनेक अलंकार,
कोमल, सरल स्वभाव मेरा, विचारों का मंथन है मेरा संस्कार।
जीवन में प्रेरणा का संचार करती हूँ,
नए अनुभवों से बंध आगे बढ़ती हूँ।
कभी मानव मन का हाहाकार सुनती हूँ,
कभी कल्पनाओ के नए विस्तार बताती हूँ।
जीवन के हर रंग से परिचित हूँ,
प्रयोगवादी, छायावादी न जाने कितने नामों से चर्चित हूँ।
मैं अपने चरित्र की हर भूमिका निभाती हूँ,
कभी दर्पण बन समाज का प्रतिबिम्ब दिखाती हूँ।
यद्यपि नव रसों का है मेरा श्रृंगार,
फिर भी मेरा सौन्दर्य है मेरी गंभीरता और मेरा ठहराव।
कुछ ठहरी हुई सी हूँ, पर ठहरती नहीं, निरंतर बहती हूँ;
फैला है जो कुछ वाणी से परे, उस मौन को मैं कहती हूँ।
क्योंकि मैं कविता हूँ,
विचारों की घाटी में बहने वाले शब्दों की सरिता हूँ।

भाभी मां

राजकुमार सिंह यादव
सेवानिवृत्त सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

आज रमेश को पहली तनख्वाह मिली थी। सभी सहयोगी कर्मचारियों ने सलाह दी थी कि वह इस प्रथम वेतन से अपने लिए कुछ अच्छी ड्रेस्सेस, जूते तथा टाईयां खरीदे क्योकि वह पिछले पूरे माह जिस प्रकार के कपडों में कार्यालय आया था, वह उसकी पद और गरिमा से मेल नहीं खाते। रमेश ने भी पूरी विनम्रता के साथ सलाह के लिए सभी कर्मचारियों का धन्यवाद किया। उसने तय किया कि आज वह ऑफिस से सीधे बाजार जाएगा और अपने लिए कपड़े खरीदने के बाद ही घर जाएगा। ।

अभी वह मार्केट में पहुंचा ही था कि उसे ख्याल आ गया। रमेश अपनी भाभी विनम्रता को भाभी मॉ कहकर ही बुलाता था। मास्टर सुधार सिंह और उनकी पत्नी यशोधरा की दूसरी संतान पहली के 16 वर्ष बाद हुई थी। दोनों बच्चों की उम्र में काफी अंतर होने के कारण छोटा पूरे घर का दुलारा था। मास्टर जी के वेतन से गृहस्थी आराम से चल रही थी। समय पंख लगाकर उड़ता जा रहा था। बड़ा बेटा सुरेश 21 वर्ष का होकर बी0ए0 की पढाई पूरी करने के बाद बी0टी0सी0 की परीक्षा पास कर चुका था। यशोधरा बहू लाने के लिए व्यग्र थी। अतः सुधार सिंह ने सुरेश की शादी दूर के रिश्तेदार की बेटी विनम्रता के साथ पक्की कर दी। कुछ ही दिनों में विनम्रता ब्याह कर घर आ गयी। नाम के अनुरूप वह थी भी अत्यंत विनम्र। इसलिए उसने थोड़े ही समय में सभी घर वालों का मन जीत लिया।

एक ट्रेन दुर्घटना ने सुधार सिंह और यशोधरा की जीवन लीला का अंत कर दिया। उन दोनों की मृत्यु के बाद घर में विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। जिन हाथों से अभी विवाह की मेंहदी भी नहीं उतरी थी, उन हाथों को गृहस्थी की चाभी सौप दी गई। सुरेश भी अभी लड़का ही था। बी0ए0, बी0टी0सी0 होने के कारण उसे आश्रित कोटे के आधार पर सहायक अध्यापक की नौकरी तो मिल गई, जो परिवार के भरण–पोषण का आधार थी। परन्तु गृहस्थी का बोझ उठाने के लिए उसके कंधे अभी तैयार नहीं थे। अचानक पिता की मृत्यु ने अनुभव का सबक सीखने का भी मौका नही दिया था।

आज विनम्रता बिस्तर पर करवटें बदल रही थी। नींद तूफान में उजड़ी झोपड़ी की तरह आंखों से गायब थी। काफी रात गए, सुरेश ने विनम्रता को जागते देखकर पूछ लिया कि अभी तक सोई नहीं। सुरेश के बार–बार पूछने पर विनम्रता ने बताया कि उसके मन में सास–ससुर की तेरहवीं में आई रिश्तेदार महिलाओं के वे शब्द तूफान की तरह उथल–पुथल मचा रहे हैं, जिससे वे महिलाएं कह रही थी कि **'ई छह साल के रमेश्वा का का हुइ है, बिचारा बिन महतारी बाप का हुई गवा। को एहिका समय से खवाई पियाई, औ कैसे ऐकर पढ़ाई लिखाई हुइ है। अब तौ भगवानै मालिक है**।' विनम्रता मन ही मन फैसला ले चुकी थी कि जब तक रमेश 15 वर्ष का नहीं हो जाएगा, तब तक वह किसी संतान को जन्म नही देगी। वह रमेश को बेटे की तरह परवरिश करने की प्रतिज्ञा ले चुकी थी।

वह सुबह जल्दी उठ गई थी। घर के सारे काम–काज भी समय से पहले ही निपटा लिए थे। उसने रमेश को भी नहला धुला कर तैयार करने के बाद खाना भी खिला दिया था। घरेलू कार्यों के समय से पहले ही समाप्त हो जाने पर सुरेश को आश्चर्य हुआ। उसने इसका कारण विनम्रता से जानना चाहा।

विनम्रता ने जवाब में अपने पति को भी जल्दी तैयार हो जाने के लिए कहा और बताया कि आज मोहल्ले में स्थित कान्वेन्ट स्कूल में रमेश का एडमीशन करवाना है। सुरेश ने कमजोर गृहस्थी तथा कान्वेन्ट की भारी–भरकम फीस का हवाला देकर रमेश का एडमिशन उसी स्कूल मे करवाने की सलाह

दी, जहां सुरेश की तैनाती थी।

सुरेश ने यह भी बताया कि वार्ड विद्यार्थी होने के कारण रमेश की फीस भी माफ रहेगी, साथ ही वह रमेश को अपने साथ ही साइकिल पर बिठाकर ले जाया करेगा, जिसके कारण उसका ध्यान भी रख सकेगा।

विनम्रता सरकारी स्कूलों में पढ़ाई के स्तर से भली भांति परिचित थी, इसलिए वह रमेश को कान्वेन्ट में पढ़ाने की अपनी बात पर दृढ़ रही। हारकर सुरेश को अपने छोटे भाई रमेश का एडमिशन कान्वेन्ट स्कूल में ही कराना पड़ा। बढ़े हुए खर्च पर जब सुरेश ने विनम्रता से इसका हल पूछा तो विनम्रता ने स्पष्ट रूप से कहा कि जब तक रमेश 15 वर्ष का नहीं हो जाएगा तब तक वे किसी भी संतान को जन्म नहीं देंगे। इस प्रकार वे अपने खर्चे को रोककर रखेंगे। अब तक सुरेश विनम्रता के स्वभाव से परिचित हो चुका था। अतः उसने विनम्रता की बात को मान लेना ही श्रेयस्कर समझा। एक मां की तरह विनम्रता रमेश की देखभाल करने लगी। वह रमेश की सभी सुख–सुविधाओं का ख्याल रखने के साथ ही रमेश के पढ़ाई संबंधी कार्यों में भी सहयोग करने लगी। रमेश ने भी पढाई में उसे निराश नहीं किया। कक्षा के श्रेष्ठ विद्यार्थियों में उसने अपना स्थान लगातार बनाए रखा। नवीं कक्षा में प्रवेश के लिए शहर के सबसे अच्छे कालेज को चुना गया और वहीं होस्टल में रखकर उसकी पढ़ाई की व्यवस्था सुनिश्चित की गई। 20 वर्ष की उम्र पार करते ही रमेश ने बी0एस0सी0 की परीक्षा गोल्ड मेडल के साथ पास की ।

यद्यपि उसकी इच्छा एम0एस0सी0 एवं पी0एच0डी0 कर किसी यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर बनने की थी, परन्तु उसने नौकरी कर अपने बड़े भाई सुरेश का हाथ बंटाने को प्राथमिकता दी। प्रथम प्रयास में ही उसका सेलेक्शन एक्साइज इंस्पेक्टर के रूप में हो गया और नियुक्ति भी अपने शहर में ही मिल गई।

इसी बीच विनम्रता ने एक पुत्र को जन्म दिया था जो अब छह वर्ष का हो चुका था। सीमित वेतन और गृहस्थी के बोझ के कारण सुरेश ने टीटू का एडमिशन अपने ही स्कूल में कराया था। वह उसे अपने साथ ही साईकिल में बिठाकर ले जाता था। स्कूल जाते समय रास्ते में वह कान्वेन्ट स्कूल भी पड़ता था, जहां रमेश की पढ़ाई हुई थी। कान्वेन्ट के सजे–धजे लड़कों एवं खूबसूरत बिल्डिंग को देखकर टीटू भी पापा से अपना एडमिशन उसी स्कूल में करवाने की जिद करता था। टीटू का ध्यान हटाने के लिए सुरेश टीटू को उसी समय गिनती या पहाड़ा सुनाने के लिए कहने लगते थे।

रमेश ने दुकानदार से दो जोड़ी अच्छी क्वालिटी का पैन्ट शर्ट का कपड़ा, भाभी मां के लिए दो सुन्दर साड़ी–ब्लाउज तथा टीटू के लिए कई जोड़ी बढ़िया रेडीमेड कपड़े खरीदने के बाद नापसंद के आधार पर वापस करने की गारंटी ली और भुगतान कर घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में टीटू के लिए अच्छी क्वालिटी की चाकलेट लेना भी वह नहीं भूला।

अंदर विनम्रता रात के खाने की तैयारी में व्यस्त थी। टीटू उसे दरवाजे पर ही खेलते हुए मिल गया। उसने उसे गोद में उठा लिया और घर के अंदर प्रवेश कर गया। उसने सबसे पहले भाभी मां के पैर छुए और उनसे आंख बंद करने का अनुरोध किया। इस दौरान नोटों से भरा लिफाफा उसने भाभी मां के पल्लू में बांध दिया। टीटू चाकलेट खाकर खुशी से झूमते हुए दरवाजे के बाहर खेलने चला गया।

विनम्रता ने जब झोला देखा तो अपने लिए साड़ी–ब्लाउज, सुरेश के लिए पैन्ट शर्ट तथा टीटू के लिए ढेर सारे कपड़े देखे, परन्तु यह क्या कि रमेश ने अपने लिए कुछ भी नहीं खरीदा। उसने पास खड़े रमेश के कान पकड़कर उसे हिलाते हुए बोली कि तू क्या समझता है तेरी भाभी मां इससे खुश हो जायेगी, तूने अपने लिए कुछ भी क्यों नहीं खरीदा। इसी बीच साड़ी के पल्लू को जब विनम्रता ने खोलकर देखा तो कई 500 के नोट लिफाफे के बाहर निकलकर विनम्रता के पैर छूने के लिए व्यग्र थे। विनम्रता को असहज देखकर रमेश ने कहा कि भाभी मां इन पैसों से हम टीटू का एडमिशन शहर के सबसे अच्छे कान्वेन्ट स्कूल में करायेंगे। जिस पढ़ाई को मैं अधूरा छोड़ आया हूं, उसे हमारा टीटू पूरा करेगा। इस

बीच सुरेश भी बाहर से आ चुके थे। भाभी – देवर के बीच हो रही गुफ्तगूं के बीच दखल देते हुए बोले कि, जरा मैं भी तो सुनूं कि मेरी अनुपस्थिति में क्या तैयारियां चल रही हैं। रमेश ने झुककर बड़े भाई के पैर छुए। फिर बात करते– करते तीनों अतीत में खो गए। टीटू द्वारा चाचू–चाचू की आवाज लगाने से विनम्रता अतीत की यादों से वापस लौटी, उसे याद आया कि उसने अभी रमेश को पानी तक नहीं पिलाया। वह पानी लाने किचन में चली गई और दोनों भाई आपस में बातों में मशगूल हो गए।

बाबा!

मुझे उतनी दूर मत ब्याहना,
जहाँ मुझसे मिलने जाने खातिर,
घर की बकरियां बेचनी पड़े तुम्हें।
ब्याहना तो वहां ब्याहना,
जहां सुबह जाकर
शाम को लौट सको पैदल......................
मेला, हाट जाते–जाते,
मिल सके कोई अपना जो,
बता सके घर– गांव का हाल–चाल
चितकबरी गैया के ब्याने की खबर
दे सके जो कोई उधर से गुजरते।
ऐसी जगह में ब्याहना मुझे..........................
बसंत के दिनों में ला सके जो रोज
मेरे जूड़े की खातिर पलाश के फूल
जिससे खाया नहीं जाए
मेरे भूखे रहने पर
उसी से ब्याहना मुझे।

–निर्मला पुतुल
साभार–राजभाषा शाखा

हिन्दी सारे भारत की राष्ट्रभाषा है हमें उस पर गर्व होना चाहिए।
– सरदार पटेल

दायित्व

राजकुमार सिंह यादव 'बेखौफ'
सेवानिवृत्त

आज मुर्गे ने रात के 3 बजे ही बांग दे दी थी। शंकर बिना शोरगुल किए ही उठा ताकि रधिया और उसके बगल में सोए मुनिया और लखना की नींद न टूटे। अभी आंखे खुलने का नाम नहीं ले रही थी क्योंकि कुछ देर पहले ही तो वह सोया था। 11 बजे तो रिक्शा चलाकर वह घर ही लौटा था। खाना खाकर सोते–सोते बारह बज गए थे। रधिया ने खाने के दौरान बताया था कि तीन महीने की फीस जमा न होने के कारण स्कूल मास्टरनी ने लखना (लखनलाल) को यह कहकर घर वापस भेज दिया था कि वह फीस जमा होने के बाद ही स्कूल आ सकेगा। 70 रूपए प्रतिदिन के हिसाब से रिक्शा किराया, ऊपर से पंचर और छोटी–मोटी खराबी का खर्चा घटाकर 200 से 250 रूपए के बीच में रोज बच जाता था। 500 रूपए कोठरी का किराया निकाल कर किसी तरह से राशन –पानी जुटा लेता था। जो बच जाता था उसमें से 500 रूपए बूढ़ी मां को भी भेज देता था। लखना 8 वर्ष और मुनिया (मुन्नीदेवी) 6 साल की उमर पार कर चुके थे, परन्तु अभी तक स्कूल का मुंह नहीं देखा था। रधिया एक दिन शाम को खाना खाते समय बुदबुदाने लगी कि **"सबके बच्चन की पढ़ाई आजकल औरतन के पेटै से शुरू होई जात है और एक हमार लखना 8 साल का हुईगा औ अबै तक स्कूल का मुंह तक नहीं देखेसि। इत्ता तौ पढ़ाई दे भगवान कि दिवारन पर लिखी इबारत तो बांचि लये ताकि जब बाप की जगह रिक्शा चलावन शुरू करे तो सवारिन का सही जगह तौ पहुँचा, सकै।"** रधिया के मन में लखना की पढ़ाई को लेकर बस इतनी सी तमन्ना थी। इसलिए उसने लखना को मुहल्ले के स्कूल में पढ़ाने के लिए शंकर पर दबाव बनाना शुरू कर दिया क्योंकि सरकारी स्कूल घर से 4 किमी0 दूर था।

आज लखना एडमिशन के लिए अपने पापा के साथ स्कूल जाने वाला था। लखना के लिए पटरे का पैजामा तथा लंकलाट की सफेद कमीज सिलवाई गई थी। किरमिच के सफेद जूते पहनकर लखना अपने आपको गोविन्दा से कम नहीं समझ रहा था। लखना को स्कूल के लिए इस तरह तैयार देखकर मुनिया रधिया के पास जाकर खड़ी हो गयी और लखना की ही तरह तैयार होकर स्कूल जाने की जिद करने लगी।

थोड़ा समझाने के बावजूद न मानने पर एक थप्पड़ गाल पर मारते हुए रधिया चिल्लाई कि 'दुई जून की रोटी के लाले हैं, एहिका पढ़ाई सूझ रही है। अगले जनम केहू अमीर घरै जन्मै, जहां रोटिन के लाले न पड़ै।'' मुनिया रोती हुई अपनी पुरानी कपड़ों की गुड़िया के साथ बाहर चली गयी। लखना पिता के साथ पड़ोस के स्कूल में पहुंचा। स्कूल के सभी बच्चे सफेद शर्ट और नीले पैन्ट की यूनीफॉर्म पहने थे। गले में लाल टाई थी और पैरों में काले जूते थे। लखना कभी उन लड़कों की ड्रेस देखता और कभी अपने पटरे के पैजामे को। पूछते–पूछते शंकर उस मास्टरनी के पास पहुंच गया जिस पर नये बच्चों को भर्ती करने की जिम्मेदारी थी। 8 साल के उम्रदराज लखना को देखकर टीचर ने पूछा कि – किस कक्षा में प्रवेश चाहिए। कक्षा एक बताने पर उसने शंकर को बहुत भला–बुरा कहा। साथ ही माता–पिता के बच्चों के प्रति दायित्वों पर एक लंबा–चौड़ा भाषण पिलाया। शंकर गर्दन झुकाकर सबकुछ सुनता रहा। वह मास्टरनी को कैसे बताता कि जब वह अपनी मां के पेट में ही था तो तभी उसका बापू गांव के मुखिया के लिए अचार की अमियां तोड़ते समय पेड़ से नीचे गिरकर मर गया था।

मुखिया ने अपने बचाव में उल्टे उस पर चोरी से आम तोड़ने का इलजाम लगाया था। बाद में पूरी जिन्दगी उसकी मां उसी मुखिया का चौका बरतन करके उसकी परवरिश की थी। गरीबी ने उसे स्कूल का मुंह तक नहीं देखने दिया था। वह तो धन्य कहो, गांव के अलगू काका को जो गांव के गरीब बच्चों को इमला और गिनती का ज्ञान अपनी चौपाल में बिठाकर कराया करते थे। जिसके फलस्वरूप शंकर दीवारों पर लिखी बड़ी–बड़ी इबारत और अंक पढ़ लेता था। आज जब मास्टरनी द्वारा पिता के दायित्वों पर लंबा–चौड़ा भाषण दिया गया तो उसने लखना को खूब पढ़ाने का संकल्प ले लिया। जब मास्टरनी ने एडमिशन फीस, ड्रेस तथा कापी–किताबों का कुल खर्चा 2000 रू0 बताया तो शंकर के पैरों तले की जमीन खिसक गयी। सपनों के सारे तोते हाथ से उड़ते नजर आने लगे, फिर भी हिम्मत जुटाकर बोला कि मैडम जी आज तो हम पता करने आये थे। पैसे का इंतजाम करके फिर आयेंगे। एडमिशन की अंतिम तारीख का अल्टीमेटम देकर मास्टरनी ने शंकर को उसके दायित्वों का स्मरण चलते–चलते फिर करा दिया।

स्कूल से घर तक के रास्ते पर शंकर के मन में विचारों का सैलाब उमड़ पड़ा था। सोचता जा रहा था कि शिक्षा और पेट भरने के बीच बड़ा दायित्व कौन सा है। अंत में उसने निर्णय लिया कि वह दोनों ही दायित्वों को पूरा करेगा। घर वापस आकर जब उसने रधिया को हिसाब–किताब समझाया तो रधिया को सांप सूंघ गया। गृहस्थी कैसे चल रही है, इसकी जानकारी उसे शंकर से ज्यादा थी। उस पर भी 2000/– रूपए का अतिरिक्त बोझ। खैर दोनों ने तय किया कि लखना को अवश्य पढ़ायेंगे। रिक्शा मालिक से 2000/– रूपए उधार लेकर लखना के एडमिशन की व्यवस्था की गयी। अब प्रत्येक माह की 200 रूपए की फीस अदायगी भारी पड़ रही थी क्योंकि 2000 रूपए की उधारी भी 400/– रूपए प्रतिमाह के दर से जो चुकानी पड़ रही थी। इसी चक्कर में 3 माह की स्कूल फीस बकाया हो गई। कई बार के अनुस्मारक के बावजूद जब फीस जमा नही हुई तो मास्टरनी ने लखना को स्कूल से वापस कर दिया।

रधिया द्वारा फीस न जमा करने के आधार पर लखना को स्कूल में न बैठने देने की बात बताए जाने पर शंकर ने तय किया कि वह अपने दायित्व के निर्वाह के लिए एक घंटा अतिरिक्त रिक्शा चलाएगा। उसने दूसरे दिन से मुर्गे की बांग के साथ बिस्तर छोड़ देने का निर्णय लिया, क्योंकि शंकर के पास कोई घड़ी नहीं थी। अमूमन मुर्गा 4 बजे के आसपास बांग देता है परन्तु उसने उस दिन 3 बजे रात को ही बांग दे दी थी। शंकर चुपचाप उठा, उसने एक खाली प्लास्टिक की बोतल में पानी भरा और कोठरी का दरवाजा बाहर से आहिस्ता से बंद कर रिक्शा लेकर निकल गया। बोतल में पानी इसलिए ले लेता था क्योंकि कभी–कभी सरकारी शौचालयो में पानी नही आता था, उस स्थिति में वह उस पानी का उपयोग कर लेता था।

नींद न पूरी होने के कारण अनमना सा अभी वह कुछ दूर ही चला था कि दो पुलिस वाले अपनी रात ड्यूटी अधूरी छोड़कर अपने–अपने घरों को जाने की तैयारी में थे। उनमें से एक के पास मोटरसाइकिल थी, दूसरे के पास कोई साधन नहीं था। बिना सवारी साधन वाले पुलिसमैन ने अपना डंडा जमीन में पटकते हुए शंकर को रोका और गरजते हुए बोला कि ''इतनी रात गए कहां चोरी करते घूम रहा है''। शंकर ने हाथ जोड़कर कहा कि दीवान साहब, मैं चोर नहीं हूं, मैं तो मेहनत पर भरोसा करता हूं। यही वजह है कि परिवार की जिम्मेदारी उठाने खातिर अतिरिक्त मेहनत कर रहा हूं और रिक्शा लेकर घर से जल्दी निकल पड़ा हूं।

सिपाही ने फिर डांटते हुए कहा कि जहां मैं कहूं वहां चलता है कि ले चलूं चौकी। अभी सारी कलाकारी भूल जाएगा। मरता क्या न करता । साहब के आदेशानुसार 6 किमी0 रिक्शा चलाकर उन्हें उनके गंतव्य तक पहुंचाना शंकर की मजबूरी थी। उस पर भी तुर्रा यह कि जब शंकर ने अपनी मजदूरी मांगी तो बदले में उसकी बूढ़ी मां को दस–बीस गालियां मिली और किसी झूठी चोरी के नाम पर सजा की ध् ामकी भी। शंकर अपने भाग्य को कोसता हुआ वापस लौट पड़ा। वापस आते–आते 5 बज चुके थे। वह फिर से अपने दायित्व के निर्वहन के लिए खड़ा होकर किसी अन्य सवारी का इंतजार करने लगा।

गजल

जनार्दन पाण्डेय
सेवानिवृत प्र0श्रे0लि0

खुशी जिसने खोजी, वह धन लेकर लौटा।
हंसी जिसने खोजी, वह चमन लेकर लौटा।
मगर प्यार को खोजने, जो चला वह,
न तन लेकर लौटा, न मन लेकर लौटा।
आदमी को आदमी, बनाने के लिए।
जिन्दगी में प्यार की, कहानी चाहिए।
और कहने के लिए कहानी प्यार की,
स्याही नहीं, आंखों वाला पानी चाहिए।
रात इधर ढलती तो, दिन उधर निकलता है।
कोई यहां रूकता है, तो कोई वहां रूकता है।
दीप और पतंग में, फर्क सिर्फ इतना है।
एक जल के बुझता है, एक बुझ के जलता है।
न जन्म कुछ, न मृत्यु कुछ, बात सिर्फ इतनी है।

भारतीयता का दूसरा नाम हिन्दी है।
— भगवतीचरण वर्मा

झंकृत वेदनाएं

उमाशंकर मिश्र
सेवानिवृत्त

जिन्दगी में जज्बातों का बहुत महत्व होता है। जिन्दगी जलवा भी बिखेरती है, लेकिन कभी–कभी खून के आंसू भी रूलाती है। जिन्दगी अनेक प्रकार की परीक्षा लेती है। तन सूख जाता है। मन कष्ट से भर जाता है। जिसने जिन्दगी में दुःख देखा ही नही उसका जन्म लेना व्यर्थ है। खुशबूदार फूलों के बीच में सोने का नाम जिन्दगी नहीं है।

10 किमी0 तक लगातार पैदल चलने के बाद शंकर थक गया था। एक बरगद के वृक्ष के नीचे बैठकर कुछ सोचने लगा। पक्षियों की चहचहाहट उसे झंकृत कर रही थी। उसे याद आने लगे विभाग में आए पवन कुमार जो रिजर्व ही नहीं सत्य के समर्थक थे।

जलाशय से शंकर ने थोड़ा पानी पिया। पानी का स्वाद ठीक नहीं था। और हो भी क्यों........... प्लास्टिक/गन्दगी और माफियाओं द्वारा कब्जा करके जलाशय/तालाब और नदियों की मर्यादा खत्म कर दी गई है। अतीत की एक–एक यादें शंकर के सामने आने लगीं। वो वृक्ष के नीचे ही सो गया। अचेतन मन की सारी एकत्रित यादें अब सामने थीं। लंका विजय के बाद भगवान राम ने उस पुल को तोड़ दिया था, कारण केवल समुद्र की मर्यादा बचाने के लिए ही। हर कार्य के पीछे कारण होता है। लेकिन सरकार अगर नया पुल बनाती है तो पुराने पुल को खत्म क्यों नहीं करती है।

बजट में पक्षियों के लिए, पशुओं के लिए अनाज आवंटित क्यों नहीं होता है? जो धन राज्यों एवं विभागों को कल्याणकारी योजनाओं के लिए दिया जाता है, उसका दुरूपयोग होता है। उसका अधिकांश हिस्सा अधिकारियों एवं नेताओँ के जेब में जाता है। पकड़े जाने पर भी कार्यवाही के नाम पर सिर्फ दिखावा होता है। स्पष्ट है कि राष्ट्र का नाश होने वाला है या बहुत हद तक हो चुका है। यह सब सोचकर मस्तिष्क वेदनाओं से भर गया। चलते हैं पवन कुमार के पास, हो सकता है कि कुछ उपाय बताएं।

शंकर का आज कार्यालय जाने का मन नहीं था। पवन कुमार की वजह से वह कार्यालय की ओर चल दिया। पवन ने शंकर से बातचीत की और समझाया – शंकर घबड़ाओं नहीं, हिम्मत मत हारो। तुम्हारा यह कथन सत्य है कि पहाड़ के तोड़े जाने तथा जंगल के काटे जाने के पश्चात रिक्त स्थान पर उसी जलवायु के पेड़ फिर से लगाए जाने चाहिए। लेकिन रिक्त जगह पर भू माफिया कब्जा कर लेते हैं। इसमें सरकार में बैठे मंत्रियों का भी हाथ होता है। हमारी संस्कृति में पक्षियों को बचाने की बात की गयी है और पुलिस संरक्षित करती है, उन शिकारियों को जो पक्षियों का शिकार करते हैं, उन्हें पकड़ते हैं और सरेआम बाजार में बेचते हैं।

उस क्षेत्र के नेता और मंत्री क्या इसे नहीं देखते हैं? पवन ने समझाते हुए शंकर से कहा–'तुम शान्त रहो, कुछ समस्याओं/कठिनाइयों को प्रकृति स्वयं दूर कर देती है। देखा, प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगा कि नहीं।

विभागीय सेमिनार चल रहा था। वक्तागण अपनी–अपनी भड़ास निकाल रहे थे। वो सीधे उठा और पीछे के रास्ते से अपनी झोंपड़ी की ओर चल दिया। रास्ते में वह सोचता जा रहा था – परमात्मा, मुझे सुख नहीं चाहिए, सुखों से मुझे बचपन से नफरत है, जितना दुःख हो मेरी झोली में डाल दो।

शाम की अजान का वक्त हो चुका था। सामने के मस्जिद से नमाज की आवाज आ रही थी। बगल वाले पार्क में कुछ पक्षी अठखेलियां कर रहे थे, मानो यह कह रहे हो कि घर का गुमनाम और शान्त कोना भी जीवन में महत्व रखता है, शायद इसीलिए हम पक्षी सूर्यास्त होते–होते अपने घोसले में आ जाते हैं।

सीधी है भाषा बसंत की

विकास वर्मा
सहायक अनुभाग अधिकारी
स्वतंत्रता सेनानी एवं पुनर्वास प्रभाग
गृह मंत्रालय

वसंत आ गया है.......... नव वसंत आया है........... यह 'नव' विशेषण क्यों? वैसे वसंत है ही पल्लवन, पुष्पन और सर्जन की ऋतु; इसलिए 'नव' विशेषण के पृथक उल्लेख की आवश्यकता नहीं, लेकिन जब मन का मौसम वासंती हो तो यह सब तर्क, वितर्क भला क्यों !

शीत ने सब दिशाएं जमा दी थीं। वसंत ने उस जम गयी प्रकृति को फिर पिघला दिया है। वह थमा ठिठका, जमा हुआ सौंदर्य फिर खिल गया है, खुल गया है, बह चला है; वह सौंदर्य राशि वासंती बयार में घुल घ्राण से प्राण में उतर आयी है, चमकते दिन की धूप में रूप–रूप में गमक आयी है, तन–मन में उमग आई है। कवि केदारनाथ अग्रवाल ने वसंत–वधू के सौंदर्य का कैसा मोहक बिम्ब रचा है –

धूप चमकती है चांदी की साड़ी पहने,
मैके में आई बिटिया की तरह मगन है।
फूली सरसों की छाती से लिपट गयी है,
जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हैं।

केदारनाथ अग्रवाल ग्राम्य प्रकृति का जैसा सजीव एवं स्वानुभूतपूर्ण चित्रण करते है, वह कृषि संस्कृति में रची–बसी हुई लेखनी ही कर सकती है; वसंत की सुवासित हवा पर वे **'बसंती हवा'** कविता लिखते हैं और सचमुच शब्दों से वे वासंती बयार बहा देते हैं –

चढ़ी पेड़ महुआ,
थपाथप मचाया;
गिरी धम्म से फिर,
चढ़ी आम ऊपर,
उसे भी झकोरा,
किया कान में 'कू',
उतरकर भगी मैं,
हरे खेत पहुँची –
वहाँ, गेहुओं में,
लहर खूब मारी।
पहर दो पहर क्या,
अनेकों पहर तक
इसी में रही मैं!
खड़ी देख अलसी
लिए शीश कलसी,
मुझे खूब सूझी –
हिलाया – झुलाया
गिरी पर न कलसी!
इसी हार को पा,
हिलाई न सरसों,
झुलाई न सरसों,
हवा हूँ, हवा मैं,
बसंती हवा हूँ!

वसंत कवियों के लिए, और कवि ही क्या किसी भी भावुक मन के लिए प्रिय ऋतु है। मेरे प्रिय कवि निराला भी वसंत पर मन भर रीझे। 'वसंतपंचमी' यानी 'माँ सरस्वती की पूजा का दिन' का त्योहार निराला को ऐसा भाया कि निराला ने अपना जन्मदिवस भी बसंतपंचमी को मनाना शुरू कर दिया। निराला का जन्म हुआ 'माघ मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी' को, लेकिन स्वयं को सरस्वती पुत्र मानकर आनन्दित होने वाले निराला ने जन्मदिवस मनाना शुरू किया 'माघ मास, शुक्ल पक्ष पंचमी' यानी 'वसंतपंचमी' को। कविता में युगों की रूढ़ि तोड़कर मुक्त छंद का विधान रचने वाले निराला के लिए अपने जन्म का

विधान तनिक बदल देना भला क्या मुश्किल था! निराला के इस वसंतपंचमी प्रेम के बारे में डॉ रामविलास शर्मा लिखते हैं –

"उन्होंने देखा कि दुलारेलाल भार्गव वसंतपंचमी को अपना जन्मदिवस मनाते हैं। उन्होंने निश्चय किया कि वह भी वसंतपंचमी को ही पैदा हुए थे। वसंतपंचमी सरस्वती – पूजा का दिन, निराला सरस्वती के वरद पुत्र; वसंतपंचमी को न पैदा होते तो कब पैदा होते?"

और निराला ने **'वर दे वीणावादिनी'** जैसा अप्रतिम गीत पुष्प मां सरस्वती के चरणों में समर्पित कर सिद्ध कर दिया कि सत्य ही वे मां के वरद पुत्र हैं।

निराला ने वसंत पर कितने ही गीत लिखे। क्या ही संयोग है कि जिसके निज जीवन में कभी वसंत का मौसम आया ही नहीं, पतझड़ ही बना रहा, उस महाप्राण कवि ने मुक्त कंठ से वसंत गाया!

निराला ने वसंत का गीत लिखा और यूं लिखा कि जैसे बाहर वसंत की छटा देखकर अपनी प्रिय पत्नी मनोहरा देवी की स्मृति मन में छा गयी हो – **"रंग गयी पग–पग धन्य धरा। हुई जग जगमग मनोहरा।"**

ग्रहणशील मन के लिए प्रकृति दृश्य संवेदना तक सीमित नहीं, बल्कि वह अन्य इन्द्रिय संवेदनाओं से भी प्रकृति के परिवर्तनों का अनुभव करता है। जैसे कि निराला के लिए वसंत की एक खास पहचान कोयल का कूकना है। "रंग गयी पग–पग धन्य धरा" गीत में ही निराला एक पंक्ति लिखते है – "गूंज उठा पिक–पावन पंचम"। वहीं निराला के एक और प्रसिद्ध वसंत गीत की प्रथम पंक्ति ही यही है – "आज प्रथम गाई पिक पञ्चम। गूंजा है मरू विपिन मनोरमद्य" **'सखि बसंत आया'** गीत में भी वे लिखते हैं – **"पिक स्वर नभ सरसाया।"**

साहित्य संसार में अपनी उपेक्षा से क्षुब्ध निराला **'हिंदी के सुमनों के प्रति पत्र'** में याद दिलाते हैं **"मैं ही वसंत का अग्रदूत।"** आगे चलकर कविवर अज्ञेय ने जब निराला की स्मृति में संस्मरणात्मक लेख लिखा तो शीर्षक दिया – "वसंत का अग्रदूत"। अज्ञेय का यह लेख निराला को एक सच्ची भावपूर्ण श्रद्धांजलि है।

निराला के वसंत की बात करते करते हम अज्ञेय तक आ पहुंचे हैं। अज्ञेय ने प्रकृति पर प्रचुर काव्य रचा है। सब मौसमों पर अज्ञेय की संवेदनशील दृष्टि ठहरी है और वसंत कोई अपवाद नही। बल्कि अज्ञेय ने अन्य ऋतुओं की अपेक्षा ऋतुराज वसंत पर संभवतः अधिक रचा है। अज्ञेय की रचनाओं में उनकी उत्कृष्ट बौद्धिकता की छाप है, लेकिन अज्ञेय शुष्क बौद्धिक नहीं है, वे आंचलिक रंग और गंध से पूरा तादात्म्य रखते हैं, भले ही उसका प्रस्तुतीकरण अपनी विशिष्ट उदात्त एवं विद्वतापूर्ण शैली में करते हैं। प्रकृति का सतत सूक्ष्म अवलोकन – आस्वादन करने वाले अज्ञेय वसंत के आगमन के लक्षणों को देखकर कुछ यूं विस्मित होते हैं –

'शिशिर ने पहन लिया वसंत का दुकूल,
गंधवह उड़ रहा पराग–धूल झूल,
कांटो का किरीट धारे बने देवदूत।
पीत–वसन दमक उठे तिरस्कृत बबूल।
अरे, ऋतुराज आ गया!

या फिर इस कविता में देखे कि अज्ञेय प्रकृति के व्यवहारों को कितनी अंतरंगता से जानते हैं –

मलय का झोका बुला गया :
खेलते ही स्पर्श से रोम–रोम को वो कंपा गया –

जागो, जागो, जागो सखि, वसंत आ गया! जागो!
पीपल की सूखी डाल स्निग्ध हो चली,
सिरिस ने रेशम से वेणी बांध ली,
नीम के भी बौर में मिठास देख हंस उठी है कंचनार की कली
टेसुओं की आरती सजा के बन गयी वधू वन–स्थली!
स्नेह भरे बादलों से व्योम छा गया –
जागो, जागो, जागो सखि, वसंत आ गया! जागो!

वसंत के बारे में बहुत कुछ कह सकूँ, इतनी गहराई से प्रकृति को जिया और परखा नही। इतना अनुभव और सानिंध्य प्राप्त नही किया प्रकृति का, कि स्वानुभुतिपूर्ण चित्रण कर सकूँ। मेरा देखा और भोगा हुआ बहुत कम है, पढ़ा हुआ ही अधिक है। लेकिन फिर भी वसंत के आगमन से असंपृक्त रह जाऊँ, इतना भी संवेदनहीन नही हूँ। वसंत की भाषा का व्याकरण भले नही जानता हूँ, लेकिन आधुनिक युग की कृत्रिम प्रवृतियां मुझे इतना भी आक्रांत नही कर सकी हैं कि इस भाषा के सौंदर्य का अनुभव न कर सकूँ। प्रगतिशील त्रयी के कवि त्रिलोचन ने **'वसंत की भाषा'** का परिचय देते हुए कहा है –

"सीधी है भाषा बसंत की ? कभी आँख ने समझी ? कभी कान ने पाई ? कभी रोम – रोम से प्राणों में भर आई ? और है कहानी दिगंत की ? नीले आकाश में ? नई ज्योति छा गई ? कब से प्रतीक्षा थी ? वही बात आ गई ? एक लहर फैली अनंत की ।"

यदि संपूर्ण वर्ष एक दिवस हो, तो वसंत निश्चय ही उषा का काल है, जागरण की बेला है। मैं इस वसंत में उठा हूँ........ सब जड़ताओं की श्रृंखलाए तोड़कर.................. देखता हूँ कि इस बार आया है मेरे हिस्से का वसंत......... मेरा यह प्रथम वसंत!

'प्रथम वसंत' से याद आया, एक रोज किसी ने मुहावरे की भाषा में प्रश्न किया– **"अच्छा, कितने वसंत देख लिए तुमने?"**

मैंने मोद भरे स्वर में कहा – **"यह प्रथम ही तो देख रहा हूँ!"**

प्रतिप्रश्न आया – **"उँह! यह क्या कविताई में बाते करते हो। अच्छा यह बताओ तुम्हारी उम्र कितनी हुई, यह जीवन कितना बीत गया?"**

और भी आह्लाद से भरकर मैंने कहा – "अभी तो जैसे जीवन शुरु ही हुआ है। अभी तो मैं जीवन के लिए प्रस्तुत हुआ हूँ। वह कोई और जनम था। इस नए वसंत में मुझे फिर से जनमने दो, सब कुछ ऐसे देखने दो जैसे मैंने प्रथम बार दृष्टि खोली हो.... अनायास, अपूर्वाग्रही पर कौतूहल से भरी दृष्टि. ....। अभी तो अपने समस्त अस्तित्व से मैं निराला की तरह मुक्त कंठ निर्भय सस्मित घोषणा करना चाहता हूँ –

अभी न होगा मेरा अंत
अभी–अभी ही तो आया है
मेरे मन में मृदुल वसंत –
अभी न होगा मेरा अंत;

हर बार वसंत में मैं पुनर्नवा हो जाना चाहता हूँ...................

गंगा –जमुनी तहजीब के शायर व कवि: बेकल उत्साही

सुभाष चंद्र गुप्ता
उप निदेशक (सेवानिवृत्त)

'भक्तिकाल' हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस स्वर्ण युग ने हमें तुलसी, सूर और कबीर जैसे अनमोल रत्न दिए हैं। यह युग आधुनिक काल और उत्तर आधुनिक काल में प्रवाहित होता रहा है। मशहूर कवि और शायर पद्मश्री बेकल उत्साही कबीर जैसे कवि और साहित्यकार थे। उनके साहित्य में कबीर के दोहे, साखी और उलटवासियों की छटा देखी जा सकती है। ये पंक्तियां उन्हें कबीर तक पहुंचा देती हैं। –

सुना है न मोमिन, न गालिब न मीर जैसा था,
हमारे गांव के शायर नजीर जैसा था,
छिड़ेगी दैरो हरम में ये बहस मेरे बाद,
कहेंगे लोग कि बेकल 'कबीर' जैसा था।

बेकल उत्साही का जन्म 01 जून 1928 को गांव रमवापुर, उतरौला, बलरामपुर में हुआ था। उनके पिता का नाम लोदी मोहम्मद शफी खान था, वे जमींदार थे, उनकी माता का नाम बिस्मिल्लाह बीबी था। बेकल का असली नाम शफीखान है, गांव के लोग उन्हें प्यार से भुल्लन भैया कहकर पुकारते थे। **'वजू कर अजमेर में, काशी में स्नान, धर्म मेरा इस्लाम है, भारत जन्मस्थान'** पर दोहा लिखने वाले बेकल उत्साही के नामकरण के सफर की कहानी बेहद दिलचस्प है। सन् 1945 में शरीफ खान की मजार पर जियारत करने गए थे, जहां हाफिज प्यारे मियां के मुंह से एक जुमला निकला– **'बेदम गया बेकल आया'** अैर मोहम्मद शफी खान ने अपना नाम बदलकर बेकल वारिसी रख लिया। सन् 1952 में जवाहर लाल नेहरू कांग्रेस पार्टी के कार्यक्रम में शामिल होने गोन्डा गए थे। वहां बेकल उत्साही ने कविता 'किसान–भारत' का पाठ कुछ इस तरह किया कि पंडित नेहरू काफी प्रभावित हुए और बोले– **ये है हमारे उत्साही शायर** । बस बेकल वारिसी ने अपना नाम बदलकर बेकल उत्साही कर लिया।

बेकल उत्साही उन चंद शायरों और शख्सियतों में से हैं, जिन्हें सही मायने में उनकी गंगा–जमुनी तहजीब के लिए याद किया जाएगा। ये बेकल उत्साही ही थे, जिन्होंने उस दौर में उर्दू मंच पर हिन्दी की साख जमायी, जब हिन्दी के लिए नाक भौं सिकोड़ी जाती थी। यह उनके गीतों और शायरी का ही कमाल था कि जल्द ही उनकी आलोचना तारीफ में बदल गई। उन्होंने हिन्दी, उर्दू के अतिरिक्त अवधी जैसी क्षेत्रीय व आंचलिक भाषा को महत्व दिया, उन्होने हिन्दी, उर्दू व अवधी को मिलाकर एक अलग भाषा तैयार की। इस मिश्रित भाषा में उन्होंने कई प्रयोग किए, जो श्रोताओं के सिर चढ़कर बोले। यह उनके गीतों और शायरी का कमाल है कि उनकी आलोचना तारीफ में बदल गयी।

पद्मश्री बेकल उत्साही की शायरी उनको जन्म जन्मांतर तक जिन्दा रखेगीं। उनकी शेरो शायरी गंगा–जमुनी तहजीब का सूर्य है जो हमेशा ज्वाजल्यमान रहेगा। बेकल ने सांप्रदायिकता के खिलाफ धर्म निरपेक्षता के लिए हिन्दी और उर्दू को आपस में मिलाकर एक नई मैत्री प्रदान की जिसे बेकल शैली कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। बेकल उत्साही ने गजल में क्षेत्रीय भाषा का अक्स मिलाकर उसे नई राह दी। कोई भी देश अछूता नहीं है जहां उनकी शायरी का लोहा न माना गया हो। उनकी गंगा–जमुनी तहजीब और संस्कृति का मिश्रण और साहित्यिक सेवाओं से प्रभावित होकर 1976 में उन्हें पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया।

दिनांक 01.12.2016 वृहस्पतिवार को वह आवास के बाथरूम में चोटिल हो गए। उन्हें डा0 राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में दिनांक 03.12.2016 की सुबह उन्होंने अंतिम सांसे लीं। रविवार सुबह से ही उनके अंतिम दर्शन के लिए भारी भीड़ जुटने लगी थी। इस भीड़ में उनके जमाने की कई नामचीन हस्तियां शामिल हुईं। उन्हें सिविल लाइन्स स्थित आवास के सामने राजकीय सम्मान के साथ दफनाया गया।

वसीम बरेलवी बेकल साहब के साथी और छोटे भाई की तरह थे। बरेलवी साहब ने बताया कि उनके साथ कितनी ही यादें जुड़ी हैं, यदि विस्तार से कहें तो एक किताब लिखी जाएगी। एक ऐसा शख्स हमारे बीच से चला गया, जिसने मोहब्बत की सीख दी, इंसान को इंसान से जोड़ने की बात कही और कलम की बुनियादी जिम्मेदारी निभायी। जब उर्दू स्टेज पर हिन्दी को स्थान नहीं मिलता था, ऐसे दौर में बेकल साहब उर्दू स्टेज से हिन्दी गीत और शायरी पढ़ते थे। उनके गीतों में हिन्दी ही नहीं अवधी की भी मिठास है। क्षेत्रीय भाषाओं को शामिल करने से हर अंचल का व्यक्ति उनसे जुड़ा था।

बेकल साहब ने विदेशों में भी हिन्दी शायरी की धाक जमाई। वे शायरी, गजल, गीत की दुनिया में आए और छा गए। पद्मश्री बेकल उत्साही के निधन पर प्रसिद्ध कवि गोपाल दास नीरज ने अपना दुःख और उनकी साहित्यिक प्रतिभा को इस प्रकार व्यक्त किया– **'बेकल उत्साही पुराने साथियों में से थे, राष्ट्र की भावनात्मक एकता के लिए जो काम उन्होंने किया है, वह सराहनीय है। उर्दू के वह पहले रचनाकार हैं, जिन्हें पद्मश्री दिया गया। मन बहुत दुःखी है, बेकल के जाने के बाद खुद को अकेला महसूस कर रहा हूं।'** बेकल उत्साही की कुछ रचनाएं

हम को यूं ही प्यासा छोड़,

हम को यूं ही प्यासा छोड़,
सामने बहता दरिया छोड़।
जीवन का क्या करना मोल,
महंगा ले ले, सस्ता छोड़
अपने बिखरे रूप समेट,
अब टूटा आइना छोड़
चलने वाले रौंद न दें,
बीच डगर में रूकना छोड़।
हो जाएगा छोटा कद,
ऊंचाई पर चढ़ना छोड़,
दीवानों का हाल न पूछ,
बाहर आजां परदा छोड़।
बेकल अपने गांव में बैठ,
शहरों–शहरों बिकना छोड़।
हमने चलना सीख लिया,
यार हमारा रास्ता छोड़।

एक दिन ऐसा भी आएगा

एक दिन ऐसा भी आएगा, होंठ–होंठ पैमाने होंगे,
मंदिर–मस्जिद कुछ नहीं होंगे, घर–घर में मयखाने होंगे,
जीवन के इतिहास में ऐसी एक किताब लिखी जाएगी,
जिसमें हकीकत औरत होगी, मर्द सभी अफसाने होंगे,
राजनीति व्यवसाय बनेगी, संविधान एक नॉवेल होगा,
चोर उचक्के सब कुर्सी पर बैठकर मूछें ताने होंगे,
एक मुंसिफ इण्टरनेट पर बैठकर दुनिया भर का न्याय करेगा,
बहस मोबाइल खुद कर लेगा, अधिवक्ता बेगाने होंगे,
ऐसी दवाएं चल जाएंगी, भूख प्यास सब गायब होगी,
नए नवेले बूढ़े होंगे, बच्चे सभी पुराने होंगे
लोकतंत्र का तंत्र न पूछो, प्रत्याशी कंप्यूटर होंगे,
और हुकूमत की कुर्सी पर काबिज चंद घराने होंगे,
गांव, खेत में शहर, दुकां में सभी मशीनें नौकर होंगी,
बिन मुर्गी के अंडे होंगे, बिन फसलों के दाने होंगे,
छोटे–छोटे से कमरों में मानव सभी सिमट जाएंगे,
दीवारें खुद फिल्में होंगी, दरवाजे खुद गाने होंगे,
आंख झपकते ही हर इंसा नील–गगन से लौट आएगा,
इक–इक पल में सदियां होंगी, दिन में कई जमाने होंगे,
अफसर सब मनमौजी होंगे, दफ्तर में सन्नाटा होगा,
जाली डिग्री सब कुछ होगी, कॉलेज महज बहाने होंगे,
बिन पैसे के कुछ नहीं होगा, नीचे से ऊपर तक यारों,
डालर ही किस्मत लिखेंगे, रिश्वत के नजराने होंगे,
मैच क्रिकेट का जब भी होगा, कामकाज सब ठप्प रहेगा,
होटल होटल जुआ चलेंगे, अबलाओं के चीर खिंचेंगे,
शायर अपनी नज्मे लेकर, मंचों पर आकर धमकेंगे,
बेकल इसको लिख लो तुम भी महिला–पुरूष में फर्क न होगा,
रिश्ता–विश्ता कुछ नहीं होगा, समधी सब अनजाने होंगे।

हिन्दी की होड़ किसी प्रान्तीय भाषा से नहीं, केवल अंग्रेजी के साथ है।
— डा0 राजेन्द्र प्रसाद

समुद्र और सॉनेट

विकास वर्मा
सहायक अनुभाग अधिकारी
स्वतंत्रता सेनानी एवं पुनर्वास प्रभाग
गृह मंत्रालय

इस वर्ष के आरंभ में पर्यटन के लिए पांडिचेरी जाने का अवसर मिला। पांडिचेरी की ख्याति इसके समुद्री तटों के लिए तो है ही, लेकिन मेरे लिए बड़ा आकर्षण यह था कि यह महर्षि अरविंद घोष की साधना भूमि है। उनके जीवन के अंतिम चार दशक यहाँ बीते और उन्होंने बहुत से आध्यात्मिक प्रयोग भी इसी भूमि पर किये, जो कि उन दिनों फ्रेंच उपनिवेश हुआ करती थी। महर्षि अरविंद का जीवन अद्‌भुत विरोधाभासों से भरा हुआ है। उनका जीवन देखकर यह आश्चर्य होता है कि कभी– कभी व्यक्ति के पूर्व जन्म के संस्कार इतने प्रबल हो सकते हैं कि वातावरण का उस पर कोई प्रभाव ही न हो सके। महर्षि के जीवन और दर्शन पर विस्तृत चर्चा फिर कभी करेंगे, अभी केवल इतना उल्लेख करूँगा कि उन्हें बचपन से ही अंग्रेजियत के रंग में रंग देने की भरपूर कोशिश की गयी लेकिन युवावस्था में जैसे ही भारतीय चिंतन से उनका परिचय हुआ, वे प्रखर राष्ट्रवादी हो गए और फिर भारतीय चिंतन को उन्होंने इस पूर्णता के साथ आत्मसात किया कि भारतीय ऋषि परंपरा के वाहक के रूप में महर्षि कहलाये। अब अपने मूल विषय पर लौटते हैं..............तो पांडिचेरी जाने का सुअवसर मिला......................

पांडिचेरी में समुद्र तट पर एक शांत सुरम्य रिसोर्ट में ठहरना हुआ। सामने क्षितिज तक विस्तीर्ण समुद्र, उठती–गिरती फेनिल लहरों का गर्जन था। दिन में धूप तेज होती, तो रिसोर्ट में बैठा ही समुद्र के असीम विस्तार को अपनी सीमित दृष्टि में समेटने का प्रयास करता। सुबह–शाम समुद्र तट पर जाता, नंगे पावों तट की नम रेती का स्पर्श अनुभव करता, कोई तेज लहर आती पैरों को छू जाती और मन को भिगो जाती............ मन तरल हो जाता। सब चिन्ताओ को छोड़ देता............. मन सरल हो जाता। इस तरलता और सरलता में दार्शनिकता का अनुभव करता। वास्तव में दार्शनिकता नहीं दार्शनिकता के ढोंग का ही अनुभव करता था, लेकिन इस ढोंग में भी अद्‌भुत आनंद था।

तट पर अपने साथ ले जाता था महर्षि अरविन्द के सॉनेटो के हिंदी अनुवादो की किताब। उनके सॉनेट मूल रूप से अंग्रेजी में है, लेकिन अंग्रेजी में हाथ जरा तंग है इसलिए हिंदी अनुवाद की किताब खरीदी। हिंदी अनुवाद अमृता भारती जी ने किया है। काव्य का अनुवाद और फिर ऐसे आध्यात्मिक भावों वाले काव्य का अनुवाद अति दुष्कर है। लेकिन फिर भी अमृता जी का अनुवाद भाव और शिल्प दोनों ही के सौन्दर्य को बनाये रखने में उल्लेखनीय रूप से समर्थ हुआ है। महर्षि अरविन्द की कविताएं गहन आध्यात्मिक भावों से संपन्न तो हैं ही, उनका साहित्यिक महत्व भी कम नही है। बताते चलें कि 1943 के साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए महर्षि का नामांकन हुआ था।

समुद्र तट पर टहलते हुए सॉनेट पढता, कुछ समझ में आता, अधिकतर नहीं समझ आता। लेकिन समझने, न समझने की परवाह किसे थी। इसी में आनंदित था कि महर्षि अरविन्द की साधना भूमि पर उनका आध्यात्मिक अनुभूतियों को शब्द देने वाले काव्य को पढ़ रहा हूँ। पता नहीं क्यों बहुत सी कवितायेँ जो कई बार पूरी समझ में भी नहीं आतीं, पढ़ते हुए इतनी अच्छी क्यों लगती हैं। संभवतः इसीलिए कि जब कोई महान सर्जक साहित्यकार भावना के गहनतम क्षणों में कोई सृजन करता है तो उसके शब्दों में वह शक्ति संचित हो जाती है जो पाठक को उस गहन भावना का पूरा तो नहीं फिर भी कुछ अंश अवश्य देती है। लेकिन महर्षि अरविन्द के काव्य को केवल भावना के गहनतम क्षणों की अनुभूति

नहीं माना जाना चाहिए, बल्कि उनकी कविताओं में उन अंतरतम आध्यात्मिक सत्यों की अनुगूंज निरंतर ध्वनित है, जिनका उन्होंने अपनी यौगिक साधनाओं में साक्षात्कार किया था; **'मुक्ति'** शीर्षक सॉनेट में वे लिखते हैं –

विशाल अनंत ज्योति में एक हो गया मेरा मन,
मेरा हृदय आनंद और शांति का एकांत,
मेरी इंद्रियां शब्द, स्पर्श, रूप के पाश से मुक्त,
शुभ्र अनंतताओं में एक बिंदु मेरा तन।
मैं उस एक परम सत्ता का आनंद हूँ अविचलित,
मैं कोई एक नहीं हूँ, वह हूँ जो सर्व स्थित।

परम सत्ता की सर्वव्यापकता के ऐसे काव्य को समुद्र के परम विस्तार के सम्मुख पढना ऐसा लगता है जैसे सुक्षम भाव, स्थूल उदाहरण के रूप में अपना प्रकटीकरण कर रहा हो। वास्तव में ऐसी आध्यात्मिक अनुभूति को भाषा जैसे सीमित माध्यम में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

लेकिन हम जैसे साधारण मनुष्यों के समझने के लिए इसके अतिरिक्त दूसरा माध्यम ही क्या है! ईश्वर और सृष्टि का स्वरुप, मनुष्य का आत्म–स्वरुप, अद्वैत आदि जैसे भाव महर्षि के सॉनेटो में सर्वत्र उपस्थित हैं। ये उनके द्वारा साक्षात्कार किये गए आध्यात्मिक सत्य ही हैं जो बार–बार उनके काव्य में शब्द लेते हैं। जहाँ कहीं आधात्मिकता से कुछ इतर चिंतन है, उसका भी पटाक्षेप किसी आध्यात्मिक निष्कर्ष पर ही होता है।

कहीं–कहीं इस आध्यात्मिकता के साथ–साथ एक विचारक और चिन्तक के भाव के भी दर्शन होते हैं। महर्षि ने अपनी दिव्य दृष्टि से आने वाले समय में संपूर्ण विश्व के लिए एक उज्ज्वल भविष्य को आकार लेते देखा था और इस बात की उन्होंने स्पष्ट उद्घोषणा भी की थी। **'वैश्विक नृत्य'** शीर्षक

सॉनेट में भले ही वे एक दृष्टा ऋषि की तरह सीधे यह उद्घोषणा नहीं करते, लेकिन एक कवि की तरह 'कृष्ण के नर्तन' को प्रतीक्षातुर दिखाई देते हैं –

यहाँ दो ताल हैं वैश्विक नृत्य की।
नित्य हम सुनते हैं काली के पैरों का संचरण
दुःख पीड़ा और अनिश्चय के आवर्तनों, लय
में करते हुए जीवन के संयोगों के भीषण, मधुर खेल का मूल्यांकन;

....

किन्तु होगा कब प्रकृति में कृष्ण का नर्तन,
उनके प्रेम, हर्ष, हास्य, माधुर्य के कलामुख का संचलन?

मेरे सम्मुख समुद्र की लहरों का अनवरत नर्तन था, जिसमें काली और कृष्ण दोनों का ही नृत्य प्रतिभासित होता है; मन में जैसा भाव हो उसी अनुरूप।

महर्षि अरविन्द के काव्य की औदार्यात्मक शक्ति हमारी सीमित चेतना में अद्भुत प्राण भर देती है। उनके भाव जिस उच्च स्तर के है, कुछ अंश में पाठक को उस स्तर का रोमांचकारी स्पर्श अवश्य मिलता है। पाठक को अपनी सीमित दृष्टि से परे जाने का अनुभव देने वाले ऐसे स्पर्श उनके काव्य में यत्र–तत्र सर्वत्र हैं।

ऐसा ही एक अनुप्राणित करने वाला अनुभव, 'विश्वरूप आत्मा' शीर्षक सॉनेट से –

मैं भौतिक मन की परिधियों के गया हूँ पार,
मैं अब नहीं हूँ एक जीवात्मा का रूपाकार।
जाज्वल्यमान आकाशगंगाएं मुझमें हुई हैं रेखांकित
मेरी अतिविशाल समग्रता है यह जगत।

समुद्र के सम्मुख यह पढ़ते हुए 'अति विशाल समग्रता' का भाव जैसे साकार रूप में अवतरित हो जाता है। पांडिचेरी के शांत समुद्र तट पर महर्षि अरविन्द के सॉनेटो को पढना – यह दो दिन ही हो सका, फिर लौट आना हुआ। लेकिन आज भी जब इन सॉनेटो को पढता हूँ, तो याद आता है वही सब – समुद्र तट का उगता सूरज, घिरती शाम, ठंडी हवा, नम रेती, नृत्यमग्न लहरों का संगीत, दूर क्षितिज का विस्तार, अथाह जलराशि और असीम अनंत आकाश!

अमर भारत की लाड़ली हिन्दी के स्वरों में भारत की राष्ट्रीय आत्मा बोलती है।

– डा० संपूर्णानंद

प्रशासनिक भाषा को सहज व सरल बनाने के सुझाव

श्रद्धा वर्मा
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

यदि प्रशासनिक भाषा को सहज व सरल बनाने का प्रयास किया जाए तो राजभाषा हिन्दी व जनभाषा हिन्दी का अंतर कम होगा। सहज, सरल, पठनीय व बोधगम्य भाषा शैली का विकास होगा। ऐसी राजभाषा लोक प्रचलित होगी। यहां इसको रेखांकित करना अप्रासंगिक न होगा कि स्वाधीनता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय नेताओं ने देश की अखंडता व एकता के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार की अनिवार्यता के साथ सरल एवं सामान्य जनता द्वारा बोली जाने वाली हिन्दी का प्रयोग करने एवं हिन्दी उर्दू की एकता पर बल दिया था। शुद्ध हिन्दी, क्लिष्ट हिन्दी, संस्कृत गर्भित हिन्दी जबरन नहीं चलायी जानी चाहिए। प्रशासनिक हिन्दी में भी हमें सामान्य आदमी द्वारा प्रयोग किए जाने वाले शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए। यदि वे शब्द अंग्रेजी से हमारी भाषाओं में आए हैं, हमारी भाषाओं के अंग बन गए हैं तो उन्हें भी अपना लेना चाहिए।

प्रेमचंद जैसे महान रचनाकार ने भी प्रसंगानुरूप किसी भी शब्द का प्रयोग करने से परहेज नहीं किया है। उनकी रचनाओं में अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। **अपील, अस्पताल, ऑफिसर,इंस्पैक्टर, डॉक्टर, एजेन्ट, एडवोकेट, कमिश्नर, कम्पनी, कॉलिज, कांस्टेबिल, कैम्प, गजट, गवर्नर, चेयरमैन ,चौक, जेल, जेलर, टिकट, डायरी, डिप्टी, डिपो, फैक्टरी आदि हजारों शब्द इसके उदाहरण हैं। प्रेमचंद जैसे हिन्दी के महान साहित्यकार ने अपने उपन्यासों एवं कहानियों में अंग्रेजी के इन शब्दों का प्रयोग करने में कोई झिझक नहीं दिखायी है। उनके लेखन में अंग्रेजी के ये शब्द** उधारी के नहीं हैं, जनजीवन में प्रयुक्त शब्द भंडार के आधारभूत, अनिवार्य, अवैकल्पिक एवं अपरिहार्य अंग हैं। फिल्मों, रेडियो, टेलीविजन, दैनिक समाचार पत्रों में जिस हिन्दी का प्रयोग हो रहा है वह जनप्रचलित भाषा है। यदि साहित्यकार, फिल्म के संवादो तथा गीतों का लेखक, समाचार पत्रों के रिपोर्टर जन प्रचलित हिन्दी का प्रयोग कर सकते हैं तो भारत सरकार का शासन, प्रशासन हिन्दी को जन प्रचलित क्यों नहीं बना सकता। फिल्मों के कारण हिन्दी का जितना प्रचार, प्रसार हुआ है, उतना अन्य किसी कारण से नहीं हुआ है। आम आदमी जिन शब्दों को प्रयोग में लाता है, उनको हिन्दी फिल्मों के संवादों एवं गीतों के लेखकों ने बड़ी खूबसूरती से सहेजा है।

भाषा की क्षमता एवं सामर्थ्य शुद्धता से नहीं, ठेठ होने से नहीं, अपितु विचारों एवं भावों को व्यक्त करने की ताकत से आती है।

राजभाषा के संदर्भ में यह संवैधानिक आदेश है कि **संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओ में प्रयुक्त रूप, शैली और पदो को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।**

यह प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग ने प्रशासनिक हिन्दी को सरल बनाने की दिशा में कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने यह आदेश जारी कर दिया है कि सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाए। अंग्रेजी के टिप्पण का हिन्दी में अनुवाद न करके, जनता को समझ में आने वाली सरल हिन्दी में यदि मूल टिप्पण लिखा जाएगा तो वह हिन्दी दौड़ेगी,गतिमान होगी, प्रवाहशील होगी। जैसे प्रेमचंद ने जन प्रचलित अंग्रेजी के शब्दों को अपनाने से परहेज नहीं किया है वैसे ही प्रशासनिक हिन्दी में भी प्रशासन से संबंधित ऐसे शब्दों को अपना लेना चाहिए जो जन प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए **एडवोकेट, ओवरसियर, एजेन्सी, एलॉट, चौक, अपील, स्टेशन, प्लेटफार्म, एसेम्बली, ऑडिट, केबिनेट, कैम्पस, सेंसर, बोर्ड, चालान, चेम्बर, चार्जशीट, चार्ट, सर्किल, इंस्पेक्टर, सिविल, क्लेम, क्लास, क्लर्क, क्लिनिक, मेम्बर, कॉपीराइट, इन्कम टैक्स, स्टोर आदि**।

जिन संस्थाओं में संपूर्ण कार्य दशकों अथवा शतकों से हिन्दी भाषा में होता आया है, वहां की फाइलों में लिखी गई हिन्दी भाषा के आधार पर प्रशासनिक हिन्दी को सरल बनाने की कोशिश भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा की जानी चाहिए। जब कोई रोजाना फाइलों में सहज रूप से लिखता है तब उसकी भाषा का रूप अधिक सहज और सरल होता है। सरल भाषा बनाने से नहीं बनती है, सहज प्रयोग करते रहने से बन जाती है, ढल जाती है। भाषा बहता नीर है।

प्रो0 महावीर सरन जैन की रचना
'राजभाषा हिन्दीः दशा एवं दिशा' से साभार

देश प्रेम हो और भाषा प्रेम की चिन्ता न हो यह असंभव है।
— महात्मा गांधी

एक झलक, क्षेत्रीय कार्यालय की गतिविधियों की

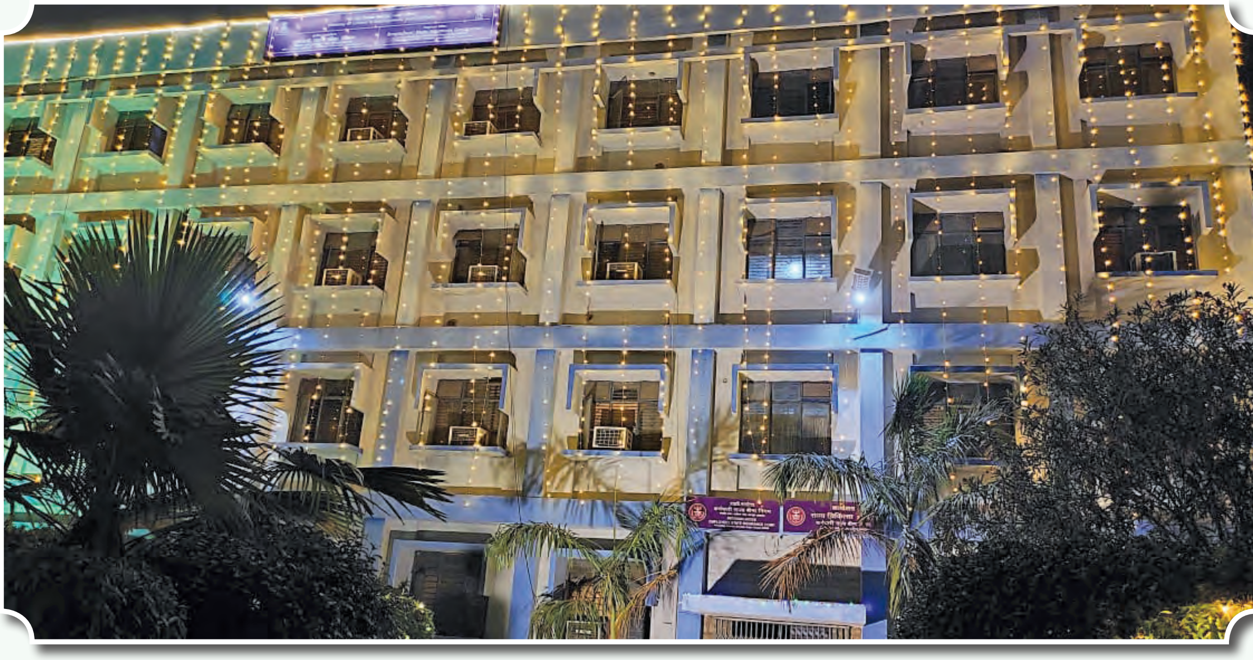

क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन सर्वोदय नगर, कानपुर
'हिन्दी कार्यशाला'

हिन्दी दिवस

कोरोना संकट और मानव जीवन पर उसका प्रभाव

सुश्री गुंजन पाण्डेय
सहायक निदेशक

कोरोना विषाणु की एक प्रजाति है, जिसका बाह्य आवरण कांटों के मुकुट जैसा दिखाई पड़ता है। मुकुट को अंग्रेजी भाषा में **क्रॉउन** तथा लैटिन भाषा में **कोरोना** कहते हैं। अतः इसी आधार पर इसका नाम कोरोना पड़ा।

यह मनुष्य तथा पशुओं में श्वसन संबंधी बीमारी उत्पन्न करता है। पशुओं की प्रतिरोधक क्षमता अपेक्षाकृत अधिक होती है अतः इसके संक्रमण से मानवजाति अधिक प्रभावित होती है। यह व्यक्ति के श्वसन तंत्र पर आक्रमण करके फेफड़ों को घातक रूप से संक्रमित करता है। सर्वप्रथम संक्रमित व्यक्ति के शरीर का तापमान बढ़ता है तत्पश्चात उसे सूखी खांसी होती है और 1 सप्ताह बाद श्वास लेने में परेशानी होने लगती है। व्यक्ति को संक्रमित करने के बाद यह अपनी संख्या बहुत तेजी से बढ़ाने लगता है, जिससे बीमार व्यक्ति के खांसने, छींकने के माध्यम से उसके शरीर से निकले हुए वायरस से दूसरे व्यक्ति या वस्तुएं भी संक्रमित हो जाती है। संक्रमित वस्तुओं के सानिंध्य में आने या जानवरों के संपर्क में अधिक समय तक रहने वाला अथवा कच्चा मांस खाने से भी इस इस वायरस को विस्तार मिलता है।

वैश्विक महामारी कोरोना के इस संकट काल में एक तरफ जहां चारों तरफ भय का वातावरण बना हुआ है, वहीं दूसरी ओर लोग इस संकट के समय को अवसर के रूप में ले रहे हैं तथा एकान्तवास के दौरान अपनी रूचि के क्षेत्र में रचनात्मकता को निखार रहे हैं। भागदौड के इस आधुनिक युग में मानव की मानव के प्रति प्रेम, समर्पण एवं निष्ठा की भावना का अभाव हो रहा था परन्तु लाकडाउन के कारण एक मानव दूसरे मानव से जुड़ता नजर आ रहा है।

इस दौरान मानव जीवन का एक और पहलू सामने आया। लोग व्यवसाय, नौकरी और शिक्षा के लिए दूसरे प्रदेशों से लेकर विदेशों में रहने लगे थे,जिन्हें अपनी जन्मभूमि पर, अपने गृहस्थान, अपने राज्य, अपने देश में रहकर कुछ करना अच्छा ही नहीं लगता था। बेहतर भविष्य की तलाश में लोग अपने राज्य को छोड़कर दूसरे राज्य या अपने देश को छोड़कर दूसरे देश तक में पलायन कर चुके थे। परन्तु इस कोरोना काल में लोग अपने घर की वापसी के लिए इतने परेशान और भावुक दिखे कि उन्होंने किसी भी कीमत पर अपने घर लौटना चाहा, इसके लिए उन्होंने अपने जान की परवाह भी नहीं की । हजारों किमी0 की दूरी लोगों ने पैदल तथा साईकिल से तय करके घर वापसी की राह पकड़ी। कुल मिलाकर कोरोना संकट के इस समय में लोग अपनी जड़ों से जुड़ गए। अपने देश, अपनी माटी और अपने गांव को देखने का उनका नजरिया बदला है, अपने देश और अपने गांव को लोग सम्मान की दृष्टि से देखने लगे हैं।

पुलिस, प्रशासन के प्रति भी आम जनता की सोच में परिवर्तन आया है। यह संभव हुआ है, कोरोना संकट के इस काल में निस्वार्थ भाव से उनके द्वारा किए गए सेवा कर्म से। डाक्टर, नर्स एवं चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े तमाम मेडिकल स्टाफ ने देवदूत की तरह कोरोना संक्रमित व्यक्तियों के प्राणों की रक्षा की। सफाई कर्मचारियों, एंबुलेन्स ड्राईवर या भूखे लोगों को खाना बांट रहे उन तमाम गुमनाम व्यक्तियों का योगदान भी इस दौरान कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं रहा।

चिन्ता का विषय यह है कि इस बीमारी से बचाव का अभी तक न तो कोई वैक्सीन बन पायी है न ही कोई कारगर दवा ही अभी तक विकसित हो पायी है। सामाजिक दूरी और जागरूकता ही इससे बचाव का सबसे कारगर उपाय है। चूंकि संक्रमित व्यक्तियों के संपर्क में आने से यह बीमारी तीव्र गति से फैलती है, इसलिए लोगों को संक्रमण से बचाने के लिए लॉकडाउन की नीति अपनाई गई।

लाकडाउन की दीर्घकालीन अवधि में घरों के अंदर सीमित हो जाने, हजारों की संख्या में घर से दूर रहकर स्वदेश व विदेश में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थी व नौकरी पेशा लोग, गरीबी रेखा के नीचे गुजर–बसर करने वाले दिहाड़ी मजदूर, बच्चे, बुजुर्ग महिलाएं सभी अपने–अपने कारणों से तनाव और व्यग्रता की स्थिति से गुजर रहे हैं। जिससे उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है।आजकल सोशल मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया अनवरत कोरोना संक्रमण संबंधी सूचनाएं प्रसारित कर रहे हैं। उनमें कई समाचार फर्जी भी होते हैं। जो लोग लगातार इनके संपर्क में रहते है, उन पर नकारात्मक प्रभाव अधिक पड़ता है। अतः इनसे दूरी बनाकर रहना बेहतर होगा। विशवसनीय स्रोतों वाले समाचार देखें। आत्मशक्ति और आत्मविश्वास को मजबूत बनाए रखें।

कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता अत्यधिक क्षीण हो जाने से व्यक्ति इस बीमारी के लक्षणों से होने वाली पीड़ा का सामना नहीं कर पाता। अतः प्रतिरोधक तंत्र को मजबूत बनाने के लिए नियमित गर्म पानी पिए और प्रोटीन युक्त आहार दाल आदि का सेवन करें । स्वस्थ रहने के लिए विटामिन सी बहुत जरूरी होता है इससे शरीर की इम्युनिटी बढ़ती है जिससे प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। विटामिन सी खट्टे फलों नीबू, संतरा, मौसंबी, आंवला में पर्याप्त रूप से पाया जाता है। अतः इन्हें आहार में नियमित रूप से शामिल करना चाहिए। च्यवनप्राश, तुलसी, दालचीनी, कालीमिर्च, अदरक, मुनक्का से बनी हर्बल चाय श्वसन क्रिया में आराम पहुंचाती है।

आसन, प्राणायाम और ध्यान रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि करके कोरोना के संक्रमण से बचाव करने में अत्यंत सहायक पाए गए है। इसलिए जॉगिग, घर के चारों तरफ वाकिंग, सीढियों से ऊपर जाना, ऊपर तथा नीचे आना जैसी शारीरिक गतिविधियाँ प्रतिदिन 30 से 40 मिनट तक करनी चाहिए। बागवानी करने

से भी मानसिक तनाव कम होता है। लोग परेशानियां भूल जाते है, डिप्रेशन की समस्या पर भी नियंत्रण किया जा सकता है।

आइसोलेशन में रह रहे लोगों के लिए यह समय भागदौड़ युक्त, रफ्तार भरी जिन्दगी से भिन्न रचनात्मक कार्य करने के अवसर के रूप में है। अनवरत व्यस्त रहने के कारण जो कार्य वह अभी तक न कर सके हों वह अब कर सकते हैं। इस दौरान अच्छी पुस्तकें, साहित्य पढ़ा जा सकता है। संगीत, पेन्टिंग, रचनात्मक लेखन, डायरी लेखन, संस्मरण लेखन आदि गतिविधियां बखूबी की जा सकती हैं। पुस्तकों का अध्ययन तथा रचनात्मक लेखन आदि कार्य करने से मस्तिष्क का अच्छा व्यायाम होता है। इससे दिमाग स्वस्थ रहता है,मानसिक क्षमता में वृद्धि होती है। इस दौरान शारीरिक रूप से सामाजिक दूरी बनाते हुए हम दूरभाष पर मित्रों, रिश्तेदारों व परिचितों से बातचीत के माध्यम से अपने रिश्तों, संबंधों को मजबूती प्रदान कर सकते हैं। इससे मानसिक मजबूती आने के साथ व्यक्ति प्रसन्न रहता है, जो कि मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार के स्वास्थ्य की कुंजी है।

जो लोग परिवार के साथ हैं, वह पारिवारिक जनों के साथ गुणवत्ता युक्त समय व्यतीत करें। बच्चों और वृद्धजनो की प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, अतः उनकी विशेष देखरेख करें, उनके साथ अधिक समय व्यतीत करें, उनसे बात करें, प्रेरक प्रसंगों पर उनके साथ चर्चा करें व बुजुर्गों के अनुभवों से सीख लेकर अपने जीवन में शामिल करें। आपसी संवाद से बहुत सी समस्याओं का समाधान अनायास ही हो जाता है और संबंधों को सुदृढ़ता भी मिलती है और आंतरिक खुशी भी। जो निश्चित ही तनाव को खत्म करने में शत–प्रतिशत सहायक होती है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि कोरोना वायरस को लेकर भयभीत होने या घबराने की जरूरत नहीं है। यह रोग अन्य संक्रमणजनित वायरल रोगों की तरह एक निश्चित समयावधि में अपने आप ठीक हो जाता है। परन्तु इतना अवश्य है कि इसका फैलाव एक व्यक्ति से दूसरे में बहुत तेजी से होता है। अतः वैक्सीनेशन बचाव एवं जागरूकता ही एकमात्र उपाय है। इसके लिए अपने हाथों को साबुन और पानी से समय–समय पर धोना, चेहरे पर मास्क लगाए रखना तथा शारीरिक दूरी बनाए रखना बहुत जरूरी है, तभी हम स्वस्थ एवं सुरक्षित रह सकते हैं।

पूर्व का वेनिसः अलेप्पी

श्रद्धा वर्मा
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

आजकल यात्राओं का शौक सभी को होता है, खासकर बच्चों की स्कूली छुट्टियों के दौरान सभी कहीं न कहीं घूमने का कार्यक्रम अवश्य बनाते हैं। यात्राओं का शौक एक लत की तरह होता है, जिसे यह लत लग जाती है,घुमक्कड़ी पर जाने के लिए मन लालायित हो उठता है। यात्राओं से हमारे व्यक्तित्व में बदलाव आता है, हमारे सोचने, समझने की क्षमता का विस्तार होता है तथा यात्राएं हमें जीवन को एक अलग नजरिए से देखने का तरीका सिखाती हैं। यह हमें पूरी दुनिया का नागरिक बना देती हैं।

केरल के बैकवाटर्स के सौन्दर्य के बारे में लंबे समय से सुन–सुन कर बैकवाटर्स को देखने की प्रबल इच्छा मन में बहुत समय से थी। परन्तु बीच में केरल में भीषण बाढ़ के आ जाने से केरल पर्यटन का कार्यक्रम न बन सका। आखिरकार नवंबर, 2019 में मैने परिवार के साथ केरल के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल एलेप्पी यात्रा का कार्यक्रम बनाया। एलेप्पी पर्यटन स्थल भारत के केरल राज्य में स्थित एक खूबसूरत शहर है और इसे अलप्पुझा के नाम से भी जाना जाता है। वहां रूकने के लिए होटल की तुलना में होम स्टे का विकल्प बेहतर लगा, ताकि हम वहां की संस्कृति, खान–पान व रहन–सहन से परिचित हो सकें। इंटरनेट पर देखकर पंबा इन नामक होम स्टे का चयन किया गया। पंबा नदी के किनारे बना हुआ होम स्टे पंबा इन इंटरनेट पर देखकर रहने के लिए उपयुक्त लगा। हमने उसे पांच दिन के लिए बुक करा लिया। निश्चित समय पर राप्ती सागर एक्सप्रेस से ट्रेन द्वारा हम एलेप्पी के लिए रवाना हुए। दो दिन के सफर के पश्चात हम अलप्पुझा रेलवे स्टेशन पर उतरे। पंबा इन होम स्टे के मालिक हमें लेने के लिए रेलवे स्टेशन आए हुए थे। वहां से कार द्वारा हम पंबा नदी के किनारे पहुंचे; रात में नदी के उस पार जाना था। अनजान जगह होने के कारण मन में एक कौतूहल मिश्रित भय का संचार हो रहा था। हाउसबोट द्वारा हम 10 मिनट में ही नदी के उस पार स्थित होम स्टे पंबा इन में पहुच गए। रात अधिक हो जाने के कारण हम अपने कमरे में पहुचकर तुरन्त सो गए।

अगले दिन सुबह होम स्टे में तैयार हो रहे दक्षिण भारतीय नाश्ते की खुशबू से हमारी आंख खुली। नाश्ता आदि करने के पश्चात हम तैयार होकर एलेप्पी घूमने के लिए निकल पड़े। सबसे पहले हाउसबोट द्वारा हम कयमकुलम झील देखने गए। कयमकुलम झील का नाम इसके चारों ओर बसने वाले शहर के नाम पर पड़ा है। यह प्राचीन काल से ही एक समुद्री व्यापार केन्द्र के रूप में जाना जाता रहा है। कोल्लम और अलेप्पी को जोड़ने वाला केरल का यह सबसे लम्बा जल से भरा हुआ पर्यटक मार्ग है। मार्ग के दोनों तरफ फैली हुई हरीतिमा मन मोह लेती है। नारियल और पाम के वृक्षों के बीच सुन्दर जलभराव, धान के खूबसूरत खेत, प्राकृतिक सुन्दरता और चारों ओर फैली हुई हरियाली रोमांच को जागृत कर एक नए कल्पना लोक में पहुंचा देते हैं। दोनों तरफ फैली हुई शानदार प्राकृतिक सुन्दरता को देखने का सबसे अच्छा तरीका हाउसबोट बुक कराकर उसमें रहना लगा।

एलेप्पी का मुख्य आकर्षण वहां के बैकवाटर में तैरते हुए हाउसबोट हैं। बैकवाटर सागर का जल है जो नीची जमीन होने के कारण वापस आ गया है और नदी का रूप ले लिया है, या फिर कह सकते है कि नदी में निचाई होने के कारण सागर से जो उंची लहरें आती हैं, वे नदी के पानी में मिलकर उसे और भी खारा बना देती हैं। ये बड़ा ही खूबसूरत दृश्य होता है।इस पानी ने सब जगहों को भर दिया हैं और गांव के गांव पानी के बीच में गुजारा कर रहे हैं। इन गांवों में बसे हुए सभी लोग अपने आने जाने और सभी कामों के लिए नाव के द्वारा इन नहरों का इस्तेमाल करते हैं। यहां पर साधारण नावों से लेकर हाउसबोट तक होती हैं।

बैकवाटर के रास्ते में हमें अलग–अलग प्रकार के छोटे एवं बड़े हर प्रकार के हाउसबोट देखने को मिले। कश्मीर के श्रीनगर में डल झील पर चलने वाले शिकारे से ये काफी कुछ साम्यता रखते हैं। हाउसबोट लग्जरी नावें होती हैं जो लकड़ी के पटरे की बनी होती हैं और सभी आधुनिक सुख–सुविधाओं जैसे एयर कंडीशनर, एक से तीन बिस्तर वाले कमरे, शौचालय, रसोई, बालकनी और मनोरंजन के विकल्पों से लैस होती हैं। बैकवाटर की यात्रा के दौरान ही हमें जल मार्ग के दोनों तरफ बसे हुए छोटे–छोटे गांव देखने को मिले। केरल के अलेप्पी का ग्रामीण जीवन हमें थोड़ा दयनीय व गरीबी से भरा हुआ लगा। कुछ लोगों के घरों के आगे पीछे दोनों तरफ सिर्फ पानी ही पानी देखने को मिल रहा था। सभी घरों के सामने पार्किंग में अन्य वाहन के स्थान पर उनकी हैसियत की मुताबिक छोटी या बड़ी नाव खड़ी दिखाई दी, कही आने–जाने के लिए जिनका लोग प्रयोग करते हैं। चारों ओर दूर–दूर तक फैला हुआ सिर्फ पानी ही पानी। नीचे पैर उतारने को कहीं जगह ही नहीं। नदी पर सैर करते–करते किनारा दिखता है, पेड़ दिखते हैं, काम करते लोग दिखते हैं, आम जन–जीवन की तरह सब कुछ दिख रहा था, परन्तु उन सबमें जमीन गायब थी।

घर बने थे, पर रास्ते गायब थे, पेड़ थे पर पानी में। नारियल से लेकर ताड़ तक और अन्य पता नहीं कितनी तरह के पेड़ थे, पर किसी की जड़े नहीं दिख रही थी। आगे चलकर रास्ता कभी संकरा कभी चौड़ा होता जा रहा था। शाम को हम वापस अपने होम स्टे में पहुंच गए। पूरे दिन पानी में ही घूमने के कारण किसी विचित्र लोक में आने का एहसास हो रहा था।

अगले दिन हमने वहां के मंदिरों तथा समुद्र तटों को देखने का कार्यक्रम बनाया। सर्वप्रथम हम शहर के बीच में स्थित मुलक्कल राजेश्वरी मंदिर देखने पहुंचे। पारंपरिक केरला शैली में बना हुआ यह मंदिर अद्भुत है। इस मंदिर में देवी दुर्गा के कई स्वरूप हैं। मंदिर की यह विशेषता इसे अन्य मंदिरों से अलग करती है कि मंदिर में इष्टदवी के ऊपर छत नहीं है।

इसके पश्चात दोपहर के भोजन के बाद हम समुद्र तट देखने गए। अलप्पुझा समुद्र तट आसपास के तटीय शहरों में पाए जाने वाले समुद्र तटों से बिल्कुल अलग है। शहर के केन्द्र में स्थित रेलवे स्टेशन से मात्र एक किमी0 की दूरी पर अलेप्पी समुद्र तट के साफसुथरे रेतीले तट के एक तरफ अरब सागर का विशाल फैलाव तथा दूसरी ओर पॉम के लम्बे–लम्बे पेड़ हैं। डूबते सूरज की सुनहरी किरणों में चमकता समुद्रजल शाम को यादगार बना रहा था।

तीसरे दिन हम अलेप्पी के चर्च तथा संग्रहालय भी देखने गए। सर्वप्रथम हम एडथुआ चर्च देखने गए । यह चर्च पम्पा नदी के तट पर स्थित है तथा यह चर्च सेंट जॉर्ज फोरेन चर्च के नाम से भी जाना जाता है। इसका निर्माण सन् 1810 में हुआ था। एडथुआ चर्च मध्ययुगीन यूरोपीय वास्तुकला को उजागर करता है और इसके प्रमुख आकर्षण में राजसी मेहराब और विशाल स्तंभ शामिल है। ईसाई धर्म से संबंधित इस चर्च में हिन्दू धर्म के अनुयायी भी आते हैं।

इसके बाद दोपहर में लंच करने के पश्चात हम रेवी करूणाकरण संग्रहालय देखने गए। यह एक स्मारक संग्रहालय है। इसका निर्माण बेट्टी करूणाकरण ने अपने पति और केरल के प्रमुख उद्योगपति रेवी करूणाकरण की स्मृति में करवाया था। वर्ष 2003 में निर्मित किया गया यह निजी स्वामित्व वाला संग्रहालय है और यह हाथी के दांत, चीनी मिट्टी के बर्तन, आकर्षक मूर्तियां, मुरानो ग्लासवर्क और तंजौर पेन्टिंग आदि के लिए जाना जाता है।

अलेप्पी में पानी के संग–संग रहते हुए 5 दिन कैसे बीत गए, कुछ पता नहीं लगा। 5 दिन के पश्चात हम वापस अपने गृह नगर कानपुर आ गए, परन्तु वहां की स्मृतियां मानस पटल पर आज भी ऐसे छायी हुई हैं जैसे अभी कल ही तो गए थे।

कानपुर के प्रमुख दर्शनीय स्थल

श्रीमती श्रद्धा वर्मा
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

कानपुर उत्तर प्रदेश का सबसे ज्यादा आबादी वाला शहर है और देश के प्रमुख औद्योगिक शहरों में से एक है। कानपुर गंगा नदी के तट पर स्थित है और उन केन्द्रों में से एक है जहां पर भारत की औद्योगिक क्रान्ति शुरू हुई। कानपुर में देखने लायक प्रमुख जगहें निम्नलिखित हैं –

1. **बिठूरः** बिठूर कानपुर का एक छोटा शहर और पवित्र गंगा का घर है। यह पवित्र शहर कई तीर्थयात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। बता दें कि इस शहर ने भारत में 1857 के विद्रोह और सेवेनपोर के सीज की प्रसिद्ध लड़ाई में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बिठूर में कई पर्यटन स्थल हैं जिसमे वाल्मीकि आश्रम, ब्रह्मवर्त घाट, पत्थर घाट, ध्रुव टीला, सिद्धिध ाम आश्रम आदि के नाम शामिल हैं।

2. **कानपुर की ऐतिहासिक जगह बुड्ढा बरगदः** बूढ़ा बरगद नाम का शाब्दिक अर्थ है एक पुराना बरगद जो कानपुर शहर के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारकों में से एक है। यहां पर बरगद का पेड़ अब मर चुका है लेकिन इसका स्मारक अब भी नानाराव पार्क में देखा जा सकता है। यह वह स्थान है जो 1857 क्रांति का केंद्र था और जहां पर 144 भारतीय क्रांतिकारियों को फांसी दी गई थी।
3. **कानपुर का प्रमुख मंदिर श्री राधाकृष्ण मंदिर** – श्री राधाकृष्ण मंदिर कानपुर का एक प्रमुख मंदिर है जिसका निर्माण जे० के० ट्रस्ट द्वारा करवाया गया है। श्री राधाकृष्ण मंदिर में पांच मंदिर हैं जो विभिन्न हिन्दू देवताओं को समर्पित है। इस आकर्षक मंदिर की वास्तुकला नवहिन्दू वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण है और इस मंदिर को नक्काशीदार सफेद संगमरमर से बनाया गया है। इस मंदिर के दर्शन के लिए जाने का सबसे अच्छा समय किसी भी प्रमुख हिन्दू त्योहार जैसे जन्माष्टमी और दिवाली के दौरान का होता है।
4. **कांच का मंदिर, कानपुरः** जैन ग्लास मंदिर जैन धर्म को समर्पित प्रमुख मंदिरों में से एक है जो कानपुर के माहेश्वरी मोहाल में स्थित है। इस मंदिर की सबसे खास बात यह है कि इसको सघन रूप से तैयार किए गए ढांचे के साथ जटिल ग्लास कट डिजाइन से सजाया गया है।
5. **जाजमऊः** जाजमऊ 1300–1200 ईसा पूर्व का एक प्राचीन क्षेत्र है जो उत्तर भारत के सबसे बड़े टेनरियों में से एक माना जाता है। शहर का यह हिस्सा गंगा नदी के पास स्थित है और पुरानी सभ्यताओं में से एक है।

6. **कानपुर का चिड़ियाघरः** एलेन फारेस्ट जू कानपुर के पास घूमने की अच्छी जगहों में से एक है। 190 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ यह जू भारत में प्राकृतिक रूप से स्थित जंगल वाले चिड़ियाघरों में से एक था। यह क्षेत्र पहले कई वन्य जीवों की प्रजातियों के लिए एक निवास स्थान था, जिनमें से अधिकांश अब भी चिड़ियाघर के अंदर रखे गए हैं।

7. **मोतीझीलः** कानपुर शहर के बेनाझावर क्षेत्र में स्थित मोतीझील पीने के पानी का भंडार है। यह झील कानपुर का एक प्रसिद्ध आकर्षण है, क्योंकि इसके आस–पास बगीचे और बच्चों का पार्क है। भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान निर्मित मोतीझील कानपुर के सबसे महत्वपूर्ण मनोरंजक स्थलों में से एक है।

8. **इस्कॉन मंदिरः** कानपुर में स्थित इस्कॉन मंदिर या श्री राधा माधव मंदिर पश्चिम बंगाल के मायापुर इस्कान मंदिर के बाद दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा मंदिर है। यह मंदिर पंद्रह एकड़ भूमि में फैला हुआ है, जिसमें कई बेहतरीन वास्तुकला और भव्य मीनारें हैं।

9. **फूल बागः** फूल बाग कानपुर का एक ऐतिहासिक स्थान है, जो प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग के समान है। फूल बाग को मूल रूप से क्वीन विक्टोरिया पार्क कहा जाता है। फूल बाग का संबंध प्रथम विश्व युद्ध से जुड़ा हुआ है।

10. **गौतम बुद्ध पार्कः** गौतम बुद्ध पार्क कानपुर में बड़ा इमामबाड़ा और शहीदों के स्मारक के बीच स्थित है। इस विशाल पार्क का इस्तेमाल अक्सर राजनीतिक दलों की बैठकों और रैलियों के संचालन के लिए किया जाता है।

इस्कॉन मंदिर

जे के मंदिर

कांच का मंदिर

टैक्स बचाने वाली विभिन्न योजनाएं

भानु प्रकाश निगम
सेवानिवृत्त

रिटायरमेन्ट से पूर्व निवेश कर कई तरह की योजनाओं में किए जाने वाले निवेश पर कर कटौती का प्रावधान कर रखा है। इन बचत योजनाओं में निवेश करके आयकर अधिनियम, 1961 के प्रावधानों के तहत कर में छूट हासिल की जा सकती है। कर बचत का लाभ दिलाने वाली कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं निम्न प्रकार हैं–

सार्वजनिक भविष्य निधि (पी0पी0एफ0) –

सार्वजनिक भविष्य निधि में निवेश करना 80 सी के तहत कर बचाने के लिए सबसे अच्छा विकल्प है। यह उन लोगों के लिए सबसे उपयुक्त है, जो अपनी सेवानिवृत्ति के लिए धन बचाना चाहते हैं। पी0पी0एफ0 में 1,50,000 रूपए तक के योगदान पर कर छूट उपलब्ध है। यह निवेश छोटी–छोटी राशियों के रूप में भी किया जा सकता है या एकमुश्त भी। इस पर मिलने वाले ब्याज की दर समय–समय पर बदलती रहती है, जिसका फैसला वित्त मंत्रालय करता है। पी0पी0एफ0 पर अर्जित ब्याज कर मुक्त होता है। इसमें किए गए निवेश पर लॉक–इन–अवधि 15 वर्ष है। हालांकि पांच साल के बाद कुछ शर्तों के अधीन राशि निकाली जा सकती है।

पांच साल के बैंक एफ0डी0–

बैंकों में पांच साल या इससे अधिक का मियादी जमा (फिक्स्ड डिपॉजिट या एफडी) कराने पर निवेश की गई राशि पर 80सी के तहत कर में छूट मिलती है। ध्यान रखें कि यह 80सी के तहत वाली अधिकतम 1.50 लाख रूपए की कर छूट वाली सीमा के अंदर ही है। कर छूट पाने के लिए बैंक एफडी कराने पर उस पर पांच वर्ष की लॉक–इन –अवधि होती है, यानी निवेश की गई राशि को बीच में नहीं निकाला जा सकता है।

नियमित एफ डी की तुलना में इस पर उच्च ब्याज दर मिल सकता है। इस पर मिलने वाला ब्याज पूरी तरह से कर योग्य है। इस निवेश के लिए आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत छूट मिलती है।

इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम–

ई एल एस एस यानी इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम ऐसी म्युचुअल फंड योजनाएं हैं, जो इक्विटी से जुड़ी होती हैं। इसमें निवेश इक्विटी में किया जाता है, जिसका लक्ष्य लम्बी अवधि में लगभग 15 प्रतिशत या इससे अधिक रिटर्न हासिल करना होता है। हालांकि ऐसे रिटर्न की कोई गारंटी नहीं होती है, लेकिन इनके इतिहास को देखने से पता चलता है कि ऐसा रिटर्न प्राप्त किया जा सकता है।

ई एल एस एस में केवल तीन साल की लॉक इन अवधि है। लॉक इन अवधि के दौरान भी समय–समय पर इससे आमदनी पाने के लिए लाभांश विकल्प को चुना जा सकता है। यह कर बचत वाले सभी विकल्पों में सबसे छोटी लॉक इन अवधि है। ईएलएसएस में निवेश पर कर कटौती का दावा 80सी

के तहत किया जा सकता है। वर्ष 2018 से इक्विटी म्युचुअल फंडों से होने वाले एक लाख रूपए से अधिक के लाभ पर 10 प्रतिशत लॉग टर्म कैपिटल गेन (एल0टी0सी0जी0) टैक्स लागू हो गया है। पर इसके बावजूद टैक्स बचाने और बेहतर रिटर्न देने में मदद करने के लिए ईएलएसएस एक अच्छा विकल्प है।

जीवन बीमा का प्रीमियम –

जीवन बीमा की योजनाएं व्यक्ति को भविष्य में किसी भी जोखिम से खुद को और आश्रितों को बचाने में मदद करती हैं। जीवन बीमा खरीदने के लिए दिए जाने वाले प्रीमियम की राशि पर 80 सी के तहत छूट मिलती है। लेकिन अगर कोई बीमित व्यक्ति दो साल से पहले योजना को छोड़ देता है, तो उसे कर की दोहरी मार झेलनी पड़ती है।

यूनिट लिंक्ड इनवेस्टमेन्ट प्लान –

यूनिट लिंक्ड इनवेस्टमेंट प्लान (यूलिप) में निवेश पर आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत छूट मिलती है। यह निवेश और बीमा का एक संयोजन है, जो कर छूट के लिए पात्र है। इसमें बाजार से संबंधित जोखिम होता है। कोई सुनिश्चित प्रतिफल (रिटर्न) नही होता है। इसमे चुनी गयी योजना (स्कीम) के आधार पर सामान्यतः 5 प्रतिशत से लेकर 11 प्रतिशत या इससे ऊंचा प्रतिफल भी मिल सकता है, जो दरअसल बाजार के प्रदर्शन पर निर्भर है। यूलिप का एक खास फायदा यह है कि परिपक्वता पर अर्जित प्रतिफल भी कर मुक्त है।

राष्ट्रीय पेन्शन योजना (एन पी एस) –

इस पेन्शन योजना में योगदान पर 80सी के तहत छूट पाने का दावा किया जा सकता है। इस योजना में कम लागत वाले निवेश विकल्प उपलब्ध हैं। इसके रिटर्न में भी 5 प्रतिशत से 10 प्रतिशत का उतार चढ़ाव है। इसमें निकासी परिपक्वता राशि के साथ कर योग्य है।

वरिष्ठ नागरिक बचत योजना –

एससीएसएस यानी वरिष्ठ नागरिक बचत योजना में 80 वर्ष से अधिक आयु के लोग निवेश कर सकते हैं। इस पर मिलने वाला ब्याज कर योग्य है। इसमें निवेश की अधिकतम सीमा 15 लाख रूपए है और इसकी लॉक इन अवधि 5 वर्ष की है। वरिष्ठ नागरिक इस योजना में तिमाही ब्याज रिटर्न का लाभ ले सकते हैं। इसके ब्याज की दर समय–समय पर वित्त मंत्रालय द्वारा तय की जाती है। इस योजना पर छूट आयकर की धारा 80सी के तहत स्वीकार्य है।

हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।
– महर्षि दयानंद सरस्वती

राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में विजेताओं को वितरित नकद पुरस्कार का विवरण:—

1. हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (दिनांक 04.9.2020)

	सर्वश्री / श्रीमती			रूपए
1.	प्रान्जुल त्रिपाठी, प्रवर श्रेणी लिपिक	—	प्रथम	1800 / —
2.	रूपाली बाजपेयी, प्र0श्रे0लि0	—	द्वितीय	1500 / —
3.	अनतं त्रिपाठी, सहायक	—	तृतीय	1200 / —
4.	वेद प्रकाश श्रीवास्तव, सहायक	—	प्रोत्साहन पुरस्कार	500 / —
5.	गौरव श्रीवास्तव, सहायक	—	प्रोत्साहन पुरस्कार	500 / —

2. हिन्दी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता (दिनांक 07.9.2020)

1.	रूपाली बाजपेयी, प्र0श्रे0लि0	—	प्रथम	1800 / —
2.	रेनू सिंह, सहायक	—	द्वितीय	1500 / —
3.	अनंत त्रिपाठी, सहायक	—	तृतीय	1200 / —
4.	प्रान्जुल त्रिपाठी, प्रवर श्रेणी लिपिक	—	प्रोत्साहन पुरस्कार	500 / —
5.	शिवांगी श्रीवास्तव, सहायक	—	प्रोत्साहन पुरस्कार	500 / —

3. हिन्दी वाक् प्रतियोगिता (दिनांक 08.9.2020)

1.	वेद प्रकाश श्रीवास्तव, सहायक	—	प्रथम	1800 / —
2.	प्रान्जुल त्रिपाठी, प्र0श्रे0लि0	—	द्वितीय	1500 / —
3.	अनतं त्रिपाठी, सहायक	—	तृतीय	1200 / —
4.	रूपाली बाजपेयी, प्र0श्रे0लि0	—	प्रोत्साहन पुरस्कार	500 / —
5.	अनीता सिंह, सहायक	—	प्रोत्साहन पुरस्कार	500 / —

4. राजभाषा ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (दिनांक 10.9.2020)

1.	रूपाली बाजपेयी, प्र0श्रे0लि0	—	प्रथम	1800 / —
2.	वेद प्रकाश श्रीवास्तव, सहायक	—	द्वितीय	1500 / —
3.	अनीता सिंह, सहायक	—	तृतीय	1200 / —
4.	दिव्या गौड़, प्रवर श्रेणी लिपिक	—	प्रोत्साहन पुरस्कार	500 / —
5.	अनतं त्रिपाठी, सहायक	—	प्रोत्साहन पुरस्कार	500 / —

आपकी पाती

पाठकों के पत्र

आपके कार्यालय की गृहपत्रिका 'सुविधा' के 23वें अंक के सफल प्रकाशन पर ढेरों बधाई तथा पत्रिका प्रेषण के लिए धन्यवाद। विभिन्न कलवेरों से सजी आपके कार्यालय की पत्रिका काफी मनमोहक एवं आकर्षक है। पत्रिका के आवरण चित्र का वर्णन कर श्रद्धा वर्मा जी ने पत्रिका के साहित्यिक पक्ष को और भी चार चांद लगा दिया है। पत्रिका के यात्रा संस्मरण, कवितायें भी काफी आकर्षक है।

आशा है कि भविष्य में भी ऐसी ही उत्कृष्ट रचनाओं से समृद्ध आपकी पत्रिका प्राप्त होती रहेगी।

जानकी सिंह
उप निदेशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
बैरकपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, सर्वोदय नगर, कानपुर से प्रकाशित विभागीय हिन्दी पत्रिका 'सुविधा' के 23वें अंक की प्रति सप्रेम प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक व स्तरीय हैं। इस पत्रिका में **'भाषा ही नहीं भावना है हिन्दी, मेरी यादगार यात्रा, राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निर्देश, एक प्याला कहानी का, जीवन का उद्देश्य'** विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका से जुड़े सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाईयां एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

रेवती रमेश
सहायक निदेशक (रांजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चेन्नई

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'सुविधा' के 23वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद। कृपया प्रतिक्रिया सादर स्वीकार करें। संपादक मंडल को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हमारी हार्दिक बधाईयां। अगले अंक के लिए शुभेच्छाओं सहित।

मनोज कुमार यादव
सहायक निदेशक
प्रभारी राजभाषा अधिकारी

आपके कार्यालय से प्रकाशित गृहपत्रिका 'सुविधा' के 23वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पूर्व के अंकों की तरह इस अंक की भी साज सज्जा एवं पृष्ठ संयोजन बेहतरीन हैं। विविध विषयों पर रचनाकारों की रोचक एवं ज्ञानवर्धक रचनाओं से सुसज्जित यह अंक बहुत ही सजीव एवं पठनीय है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक हैं।

विविध गतिविधियों के छायाचित्र पत्रिका को और भी आकर्षक बना रहे हैं। पत्रिका से प्रत्यक्ष अथवा

परोक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को साधुवाद। हमें इसके अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

प्रमोद कुमार निराला
सहायक निदेशक (रांजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पटना

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'सुविधा' का 23वां अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। जितना आपकी पत्रिका का इतिहास समृद्ध है, उतना ही वर्तमान अंक भी समृद्ध है। विविध चित्रों के समावेश ने पत्रिका को जीवंत बना दिया है। राजभाषा गतिविधियों के साथ–साथ साहित्य की विभिन्न विधाओं से सज्जित यह पत्रिका पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत सिद्ध होगी।

पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को बधाई। अगले अंक की सतत प्रकाशन की कामना के साथ।

श्याम सुन्दर कथूरिया
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
नई दिल्ली।

आपके कार्यालय की गृहपत्रिका 'सुविधा' का 23वां अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

पत्रिका की साज–सज्जा उत्कृष्ट है और मुखपृष्ठ भी आकर्षक है। पत्रिका के सभी लेख रोचक व ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप से विकास वर्मा, सहायक अनुभाग अधिकारी द्वारा रचित 'सतपुड़ा के घने जंगल एवं श्रद्धा वर्मा, व0हि0अनु0 द्वारा रचित 'मेरी यादगार यात्रा' पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत हुआ मानो उन स्थानों पर मैं स्वयं ही विचरण कर रहा था। श्री राकेश कुमार गुप्ता, उप निदेशक द्वारा रचित 'हमने भी एक घर बनाया' बहुत ही मर्मस्पर्शी है और जीवन की कड़वी सच्चाई बयान करती है। गुँजन पाण्डेय, सहायक निदेशक द्वारा रचित 'कैसे पढ़ें पुस्तकें' तथा योगेश निधीश, सहायक निदेशक द्वारा रचित 'सकारात्मक तथा नकारात्मक विचार हर उम्र के व्यक्तियों के लिए प्रेरणादायक है। राजकुमार सिंह यादव द्वारा रचित कविता 'परिभाषा' एवं 'पुकार' प्रशंसनीय है।

विविध विषयों के संग्रहों के साथ पत्रिका बहुत ही अच्छी है। पत्रिका के संपादन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई। पत्रिका के आगामी अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

डा0 इम्तिहान हुसैन
चिकित्सा अधीक्षक
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
आदर्श अस्पताल, नामकुम, रांची

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'सुविधा' का वर्ष 2018–19 अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद।

पुस्तक के सफल प्रकाशन में संरक्षक की कलम से अति सराहनीय कदम है। इस अंक के लेख, कविता, कहानी अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं। आपकी पत्रिका के 'भाषा ही नहीं भावना है हिन्दी',

'सतपुड़ा के घने जंगल', आवश्यक है समय का सम्यक प्रबंधन, एक प्याला कहानी का, कानपुर से कोटा आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय हैं। आगामी अंक के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

धीरेन्द्र कुमार
सहायक निदेशक (रा0भा0 प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
ठाणे

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'सुविधा' प्राप्त हुई। हार्दिक धन्यवाद। पुस्तक का सफल प्रकाशन एक सराहनीय कदम है। इस अंक में लेख, कविताएं, एवं छायाचित्र अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं। पत्रिका में कार्यालय में होने वाली विविध गतिविधि एवं आयोजनों की झलक दिखाई देती है। इस पत्रिका में सतपुड़ा के घने जंगल, पुकार, एक प्याला कहानी का आदि लेख पठनीय हैं।

सुभाष चन्द्र लाल
उप निदेशक (रा0भा0 प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
मैसूर

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'सुविधा' के 23वें अंक को पढ़कर अत्यंत हर्ष हुआ। पत्रिका भेजने के लिए हार्दिक धन्यवाद स्वीकार करें। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं रोचक, स्तरीय एवं जानकारी से भरपूर हैं। 'कैसे पढ़ें पुस्तक', 'आवश्यक है समय का सम्यक प्रबंधन, सकारात्मक तथा नकारात्मक विचार विशेष रूप से पठनीय हैं।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के श्रेष्ठ संपादन के लिए बधाई।

रत्नेश कुमार गौतम
निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
गुरूग्राम

आपके द्वारा भेजी गयी पत्रिका की प्रति हमें प्राप्त हुई। पत्रिका के 23वें अंक के लिए बधाई। पत्रिका में समाहित समस्त सामग्री विविधमुखी व रोचक है। हमने भी एक घर बनाया, कैसे पढ़े पुस्तकें, आवश्यक है समय का सम्यक प्रबंधन, आदि रचनाएं काफी सराहनीय, शिक्षाप्रद व पठनीय हैं।

पत्रिका का मुखपुष्ठ काफी लुभावना है। अधिकतर लेख एक दूसरे से बढ़कर हैं। प्रकाशन से जुड़ें सभी सज्जनों को अभिनंदन। अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

आजाद सिंह
उप निदेशक (राजभाषा प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
बेंगलूर दक्षिण (बमसांन्द्रा)

ई०एस०आई०सी०-2.0
चिन्ता से मुक्ति

समाचार पत्र की सुर्खियों से

ईएसआइसी के तहत हर जिले में मिलेंगी स्वास्थ्य सेवाएं

नई दिल्ली, प्रेट्र: कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआइसी) के तहत मिलने वाली स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार अब देश के सभी 735 जिलों में किया जा रहा है। ईएसआइसी की स्थायी समिति के सदस्य एसपी तिवारी ने बताया, यह विस्तार एक अप्रैल, 2021 से प्रभाव में आ जाएगा। इससे जुड़े बजट पर स्थायी समिति ने बुधवार को अपनी मंजूरी दे दी।

नई व्यवस्था के तहत ईएसआइसी योजना के लाभार्थियों को आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जनआरोग्य योजना के अंतर्गत स्वास्थ्य सेवाओं की सुविधा भी मिलेगी। इसके अलावा आयुष्मान योजना के लाभार्थी भी ईएसआइसी के अस्पताल व स्वास्थ्य केंद्र जाकर इलाज करा सकेंगे।

नवंबर में ईएसआइसी से जुड़े 9.33 लाख नए सदस्य

नई दिल्ली, प्रेट्र: एंप्लॉइज स्टेट इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन (ईएसआइसी) की सामाजिक सुरक्षा योजना से नवंबर, 2020 में करीब 9.33 लाख नए लोग जुड़े। इससे पिछले महीने यानी अक्टूबर, 2020 में 11.99 लाख नए लोग जुड़े थे। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) की ताजा रिपोर्ट में यह बात सामने आई है।

कोरोना महामारी के कारण ईएसआइसी से जुड़ने वाले लोगों की संख्या में तेज गिरावट आई थी। अप्रैल में 2.63 लाख, मई में 4.89 लाख, जून में 8.87 लाख, जुलाई में 7.63 लाख, अगस्त में 9.5 लाख और सितंबर में 11.58 लाख नए सदस्य ईएसआइसी की सामाजिक सुरक्षा योजना से जुड़े थे। इससे पहले, फरवरी और मार्च, 2020 में क्रमशः 11.83 लाख और 8.21 लाख नए सदस्य जुड़े थे। आंकड़ों के मुताबिक, सितंबर, 2017 से नवंबर, 2020 तक कुल 4.5 करोड़ लोग ईएसआइसी से जुड़े थे।

एनएसओ की रिपोर्ट ईएसआइसी, ईपीएफओ और पेंशन फंड रेगुलेटरी डेवलपमेंट अथॉरिटी की विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जुड़े लोगों के पेरोल डाटा पर आधारित है। एनएसओ ने अप्रैल, 2018 से इस संबंध में डाटा जारी करने की शुरुआत की थी। इसमें सितंबर, 2017 से डाटा जुटाए गए थे। एनएसओ ने कहा कि रिपोर्ट से संगठित क्षेत्र में रोजगार की स्थिति का अनुमान लगता है। हालांकि आंकड़े कई अलग-अलग स्रोतों से जुटाए जाते हैं, इसलिए कुछ आंकड़े एक से ज्यादा जगह पर भी हो सकते हैं। इसलिए इससे रोजगार की पूरी तरह सही तस्वीर सामने नहीं आती है। ईपीएफओ से नए जुड़े लोगों की संख्या नवंबर, 2020 में 10.10 लाख रही, जो अक्टूबर, 2020 में 10.56 लाख थी। सितंबर, 2017 से नवंबर, 2020 तक इससे कुल करीब 3.85 करोड़ नए सदस्य जुड़े।

सहूलियत | तीसरी लहर की गंभीरता को देखते हुए एहतियातन लिया गया निर्णय

कोरोना के इलाज को तैयार हो रहे बीमा अस्पताल

जासं, कानपुर : कोरोना वायरस की तीसरी लहर को ध्यान में रखते हुए कर्मचारी राज्य बीमा योजना (ईएसआइसी) से जुड़े अस्पतालों में तैयारी शुरू कर दी गई है। ईएसआइसी (बीमा) अस्पतालों में इलाज के लिए आने वाले बीमित कामगार एवं उनके स्वजन के इलाज के लिए अलग इंतजाम किए जाने हैं। इसके लिए अस्पतालों में सुविधाएं एवं संसाधन बढ़ाए जाने हैं। बीमा निदेशालय ने राज्य सरकार के माध्यम से केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजा है। राज्य एवं केंद्र सरकार की दोहरी व्यवस्था की वजह से कर्मचारी राज्य बीमा योजना से जुड़े अस्पतालों में सुविधाएं और संसाधन का टोटा है। अब कोरोना की तीसरी लहर से निपटने का इंतजाम बीमा अस्पतालों में भी करने का निर्णय लिया गया है। शहर में चार बड़े बीमा अस्पताल हैं, जहां न आक्सीजन पाइप लाइन और न ही जरूरी उपकरण हैं। ऐसे में प्रत्येक अस्पताल में अलग कोविड वार्ड बनाने का निर्णय लिया गया है, जहां 10-10 बेड होंगे। इस कोविड वार्ड में आक्सीजन पाइप लाइन, बाई पैप और हाई फ्लो नेजल कैनुला का इंतजाम किया जाना है। श्रम एवं स्वास्थ्य सेवाओं के निदेशक प्रेम प्रकाश ने कहा कि कोरोना वार्ड बनेंगे।

ईएसआइसी जाजमऊ अस्पताल में की गई है पूरी तैयारी

केंद्र सरकार की कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआइसी) शहर के जाजमऊ बीमा अस्पताल, लखनऊ, वाराणसी, बरेली और साहिबाबाद में बीमा अस्पताल की देखरेख स्वयं कर रहा है। इन अस्पतालों में कोविड की पूरी तैयारी कर ली गई है। इसके तहत सभी बेड पर आक्सीजन पाइप लाइन लगाने का कार्य पूरा कर लिया गया है। जरूरी उपकरण भी मंगाए गए हैं।

तेजी से स्थापित करें आक्सीजन जनरेशन प्लांट : मुख्य सचिव

जासं, कानपुर : मुख्य सचिव राजेंद्र कुमार तिवारी ने सोमवार रात वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने हर हाल में 31 जुलाई तक आक्सीजन जनरेशन प्लांट स्थापित करने का आदेश दिया है। उन्होंने कहा कि इस कार्य में किसी तरह की लापरवाही नहीं होनी चाहिए। डीएम ने बताया कि हैलट के इमरजेंसी, न्यूरो साइंस सेंटर, मेटरनिटी विंग, मुरारी लाल चेस्ट हास्पिटल, बाल रोग विभाग व उर्सला, कांशीराम अस्पताल में प्लांट स्थापित होंगे।

'उप्र के 75 जिलों में लागू होगी कर्मचारी राज्य बीमा योजना'

पनकी स्थित ईएसआइ औषधालय का उद्घाटन करते केंद्रीय श्रम, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस राज्यमंत्री रामेश्वर तेली (दाएं से तीसरे)। साथ में महापौर प्रमिला पांडेय (बाएं से दूसरी), सांसद सत्यदेव पचौरी (बाएं से तीसरे), श्रम एवं रोजगार राज्यमंत्री मनोहर लाल उर्फ मन्नू कोरी (दाएं से दूसरे) व विधायक सुरेंद्र मैथानी (दाएं) • जागरण

सौगात
- केंद्रीय श्रम राज्य मंत्री ने बीमा डिस्पेंसरी का किया उद्घाटन
- प्रदेश के 42 जिलों में ही अभी लागू है ईएसआइसी

जागरण संवाददाता, कानपुर : उत्तर प्रदेश के 75 जिलों में कर्मचारी राज्य बीमा योजना (ईएसआइसी) लागू होगी। अभी प्रदेश के 42 जिलों में ही ये लागू है। अब श्रम मंत्रालय सभी जिलों में इसकी सुविधा मुहैया कराने जा रहा है। यह बात केंद्रीय श्रम, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री रामेश्वर तेली ने शुक्रवार को पनकी में ईएसआइसी (बीमा) डिस्पेंसरी और शाखा कार्यालय के उद्घाटन पर कही।

उन्होंने कहा, जिन जिलों में ईएसआइसी लागू नहीं है, वहां पर लोकल डाक्टरों से अनुबंध करके बीमित कामगारों और उनके स्वजन को इलाज मुहैया कराया जाएगा। गंभीर स्थिति में जिलों से ही निजी अस्पतालों में उन्हें रेफर करने की सुविधा भी मिलेगी। उन्होंने बताया कि शाहजहांपुर में 100 बेड का बीमा अस्पताल बन रहा है। इसी तरह बरेली में भी बीमा अस्पताल तैयार है। बीमा डिस्पेंसरी गोरखपुर में भी तैयार होने वाली है। बीमित कामगारों के लिए संसाधन तैयार किए जा रहे हैं ताकि उन्हें हर जगह इलाज मुहैया हो सके। प्रदेश के श्रम राज्य मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि हर किसी को इलाज दिया जा रहा है। प्रदेश में रेफर केस के लिए 61 निजी अस्पताल संबद्ध हैं। सांसद सत्यदेव पचौरी, एमएलसी सलिल विश्नोई, विधायक सुरेन्द्र मैथानी ने भी विचार रखे। मेडिकल कमिश्नर डा. आरके कटारिया, आयुक्त एस रविचंद्रन मौजूद रहे।

एक ही जगह पर इलाज व हितलाभ की सुविधा

केंद्रीय श्रम राज्य मंत्री ने कहा कि पनकी बीमा डिस्पेंसरी से बीमित कामगारों को एक ही जगह स्वास्थ्य और नकद हितलाभ की सुविधा मिलेगी। 2.30 करोड़ रुपये से डिस्पेंसरी बनकर तैयार हुई है, जहां छह बेड की इमरजेंसी भी है। इस डिस्पेंसरी से डेढ़ लाख बीमित कामगार लाभान्वित होंगे। इस डिस्पेंसरी को राज्य सरकार ही चलाएगी। नए डाक्टरों को रखने के लिए कहा गया है।

असंगठित क्षेत्र का हर तीसरा श्रमिक ई-श्रम पोर्टल पर

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय श्रम मंत्री ने शनिवार को कहा कि देश में असंगठित क्षेत्र में काम करने वाला हर तीसरा श्रमिक अब ई-श्रम पोर्टल पर पंजीकृत है। इसी के साथ पोर्टल पर कुल पंजीकरण का आंकड़ा चार महीने में 14 करोड़ को पार कर गया है। ई-श्रम पोर्टल पर असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों का डाटाबेस बनाया जा रहा है, जिससे सरकार को उन्हें विभिन्न सामाजिक सुरक्षा और अन्य कल्याणकारी योजनाओं का फायदा पहुंचाने में मदद मिलेगी। ई-श्रम पोर्टल की शुरुआत इस वर्ष 26 अगस्त को हुई थी। श्रम और रोजगार मंत्री ने ट्वीट किया, 'ई-श्रम पोर्टल पर पंजीकरण महज चार महीने में 14 करोड़ के आंकड़े को पार कर गया।' पंजीकरण में उप्र, बंगाल, बिहार, ओडिशा व झारखंड सबसे आगे हैं। पंजीकरण कराने वालों में 52.56% महिलाएं हैं, 47.44% पुरुष हैं।

श्रमिकों के लिए ईएसआइसी अस्पताल जल्द होगा शुरू

सुनी समस्याएं
- सांसद पचौरी बोले, स्वास्थ्य मंत्री से जल्द करेंगे बातचीत
- समस्या के समाधान के लिए प्रमुख सचिव आवास से मिलेंगे

जासं, कानपुर: औद्योगिक इकाइयों में काम करने वाले श्रमिकों के लिए पनकी साइट-5 में बनाए गए कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआइसी) अस्पताल को शुरू कराने के लिए सांसद सत्यदेव पचौरी जल्द ही स्वास्थ्य मंत्री से बातचीत करेंगे। उद्यमियों के साथ हुई बातचीत में उन्होंने यह आश्वासन दिया।

रविवार को सांसद समस्याएं सुनने के लिए उद्योग कुंज दादानगर साइट-5 पहुंचे थे। एसोसिएशन के अध्यक्ष जय हेमराजानी व पदाधिकारियों ने उन्हें अपनी समस्याओं को लेकर लिखित रूप से अवगत कराया। उद्यमियों ने औद्योगिक संपत्तियों व संपत्ति कर निस्तारण, पनकी साइट-5 में श्रमिकों के लिए कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल शुरू कराने की मांग की। उद्यमियों ने बताया कि अस्पताल का निर्माण काफी समय पहले कराया जा चुका है। सांसद ने कहा कि जल्द ही स्वास्थ्यमंत्री से दिल्ली जाकर बातचीत करूंगा। औद्योगिक क्षेत्रों में हाउस टैक्स की समस्या के समाधान के लिए प्रमुख सचिव आवास से भी वार्ता की जाएगी। इस मौके पर एसोसिएशन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष तरूण खेत्रपाल व सुनील वैश्य के अलावा दिनेश बरसिया व आशीष मिश्रा आदि अन्य उद्यमी मौजूद रहे।

वहीं, उद्यमियों ने अनवरगंज से मंधना तक रेल लाइन हटाए जाने के लिए सांसद की ओर से किए जाने प्रयास की सराहना की।